गोलालारीय समाज का मुखपत्र

RNI No. MPHIN/2008/26873
No. MP/IDC/1252/2018-2020

सेवा में,

मासिक
गोलालारीय दर्शन

लेट पोस्टिंग

अपनों के साथ अपनी बातें

golalariya.darshan@gmail.com
गोलालारीय दर्शन यहां भी देख सकते है –
www.golalariya.com

गोम्मटेश्वर बाहुबली विशेषांक

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं । हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसको समाज से प्यार नहीं ।

वर्ष : 9 अंक : 3 पृष्ठ संख्या : 10 माह - 15 जनवरी 2018 सहयोग राशी 1100/- देकर सदस्य बनें ।

सौभाग्य आपको बुला रहा है...

इतिहास की प्रमाणिकता बनाये रखना संपादकों की जिम्मेदारी - आचार्य श्री वर्धमानसागरजी महाराज

भक्ति से मुक्ति की ओर प्रवृत्त करेगा महामस्तिकाभिषेक - पू. स्वस्तिश्री चारुकीर्तिजी भट्टारक

श्रवणबेलगोला । गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी महामस्तकाभिषेक-2018, 7 फरवरी से 26 फरवरी 2018 के पूर्व आयोजित विभिन्न सम्मेलन श्रृंखला में 22 दिसम्बर 2017 को देशभर के जैन पत्र पत्रिकाओं के सम्पादक-पत्रकारों की राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न हुई । श्रवणबेलगोला में विराजित वात्सल्य वारिधि, राष्ट्रगौरव आचार्य श्री वर्धमानसागरजी महाराज सहित समस्त आचार्य-मुनि-आर्यिका संघो के आशीर्वाद व पूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्तिजी भट्टारक स्वामीजी के नेतृत्व व प्रचार-प्रसार उप-समिति के अध्यक्ष श्री पुनीत जैन (टाइम्स ऑफ इण्डिया) व संयोजक श्री स्वराज जैन टाईम्स ऑफ इण्डिया दिल्ली के आमंत्रण पर देश की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं के 100 से अधिक सम्पादक-पत्रकारों ने गोम्मटेश के महामस्तकाभिषेक एवं श्री भगवान बाहुबली के सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लिया ।

मंगल कलश स्थापना व गुरू आशीर्वाद समारोह में आचार्यश्री वर्धमानसागरजी महाराज ने चामुण्डराय मण्डप में कहा कि पत्रकार चौथा स्तम्भ है जिनका परम कर्तव्य है कि जहाँ की जैसी परम्परा है उसका पालन हो साथ ही ऐतिहासिक तथ्यों के साथ छेड़खानी न हो । इतिहास के साथ छेड़खानी न कर यथास्थिति के साथ तथ्यपूर्ण जानकारी देकर पत्रकार-सम्पादक बुद्धिजीविता का उदाहरण प्रस्तुत करें । प्रज्ञाश्रमण मुनिश्री अमितसागरजी महाराज ने कहा कि पत्रकार का दृष्टिकोण समीक्षात्मक होना चाहिये । अच्छाई के साथ बुराई, आलोचना के साथ समालोचना कर समाज, राष्ट्र को जागृत करना पत्रकार का परम कर्तव्य है ।

मंगल कलश स्थापना सर्व श्री पुनीत जैन, सी.ए. आदीश कुमार जैन, पी.वाय.राजेन्द्रकुमार आदि ने की । समस्त पत्रकारों ने आचार्य संघ का आशीर्वाद प्राप्त किया ।

महामस्तकाभिषेक हमारी दिगम्बर जैन परम्परा का गौरव उत्सव - पूज्य भट्टारक स्वामीजी

स्थानीय बाहुबली पॉलीटेक्निक कॉलेज परिसर में बने विशाल मण्डप में श्रीमति सौम्या सर्वेश जैन के कन्नड़ व प्राकृत भाषा में बाहुबली स्तुति से प्रारम्भ संगोष्ठी मे मंगलाचरण अखिल भारतीय शास्त्री परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष व समाज गौरव डॉ. श्रेयांसकुमार जैन बड़ौत ने किया । मार्गदर्शन देते हुए परमपूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्तिजी भट्टारक

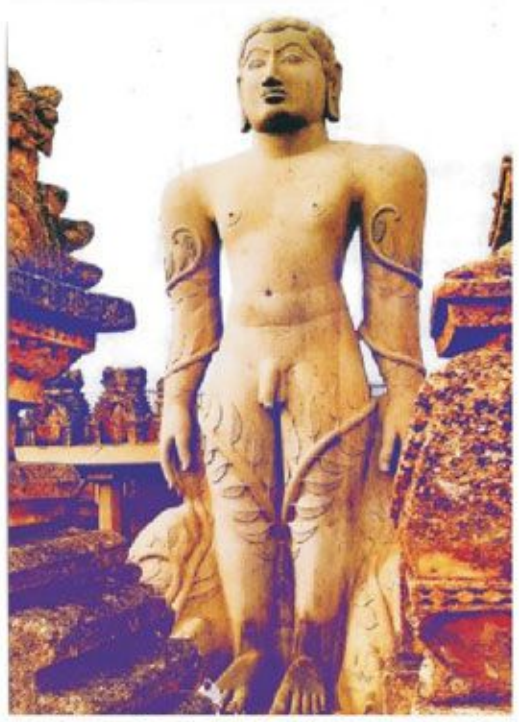

स्वामीजी ने कहा कि भक्ति से शक्ति और शक्ति से युक्ति व युक्ति से मुक्ति का पर्व महामस्तकाभिषेक है जो 12 वर्ष के अंतराल में होता है । स्वामीजी ने 1910 में हुए महामस्तकाभिषेक का जिक्र करते हुए बताया कि एक अंग्रेजी समाचार पत्र में महामस्तकाभिषेक की खबर दूसरे दिन छप जाए इस हेतु एक पत्रकार ने कबूतर को छह माह की ट्रेनिंग दी गई और वह कबूतर मस्तकाभिषेक की खबर लेकर मद्रास गया और अगले दिन अखबार में महामस्तकाभिषेक की खबर छप गई, आज तो हर बात का सीधा प्रसारण हो रहा है । श्रवणबेलगोला हमारी श्रमण संस्कृति का प्रतिनिधि तीर्थ है व हमारी परम्परा का गौरव उत्सव है । महोत्सव में संस्कृति के पालन के साथ लोक कल्याण की भावना का प्रमुखता दी जावेगी । 1993 में दानराशि की बचत से इंजीनियरिंग कॉलेज का निर्माण कराया गया । आज यह भव्य आयोजन इसी प्रांगण से प्रारंभ हो रहा है । इस महामस्तकाभिषेक से जो राशि बचेगी उससे मेडिकल कॉलेज का निर्माण कराने का संकल्प लिया है ।

80 लाख लोग आएंगें महामस्तकाभिषेक में -

महामस्तकाभिषेक महोत्सव के प्रचार-प्रसार उप-समिति के अध्यक्ष श्री पुनीत जैन ने कहा कि श्रवणबेलगोला का नाम सुनकर हर जीव के मन में अपार शांति, त्याग, मैत्री का संचार होने लगता है । हम सभी का दायित्व है कि हम भगवान बाहुबली स्वामीजी के सन्देश व पूज्य स्वामीजी की भावना को जन-जन तक पहुँचाये व सक्रियता से प्रचार-प्रसार में जुट जाए ।

जर्मन तकनीक से बन रहा है महामस्तकाभिषेक मंच-

महामस्तकाभिषेक महोत्सव के कार्याध्यक्ष श्री एस.जितेन्द्रकुमार बेंगलूरू ने विंध्यगिरि पहाड़ी की जानकारी देते हुए बताया कि महामस्तकाभिषेक हेतु जर्मन तकनीक से चार मंजिला 100'×60' का मंच बनाया जा रहा है जिसमें दो लिफ्ट आने-जाने के लिये व अभिषेक सामग्री की लिफ्ट अलग होगी । प्रतिदिन 8000 लोगों के दर्शन का प्रबंध रहेगा । प्रतिमा पर कोई नुकसान न हो इस हेतु पुरातत्व विभाग ने रसायन की परत चढ़ाई है ।

30 हजार श्रद्धालुओं के आवास की अत्याधुनिक व्यवस्था रहेगी-

आवास उप-समिति के अध्यक्ष श्री अनिल सेठी बेंगलूरू ने बताया कि 11 नगर बनाये जा रहे है । त्यागी नगर पूर्ण हो चुका है । सभी नगर के लिए अलग-अलग व्यवस्था की जा रही है, एकसाथ 30 हजार लोग ठहरे यह व्यवस्था की जा रही है । 80 फीट चौड़े रोड़ पर सारी सुविधाएँ उपलब्ध कराने का प्रबंध किया गया है जिससे आवागमन अवरुद्ध न हो । आधुनिकतम सुविधाएँ कॉटेज में दी जायेगी । महोत्सव के पहले 20 दिनों में 30 से 35 लाख व बाद के छह माह में करीब 45 लाख श्रद्धालुओं की आने की सम्भावना है । सभी के लिए आधुनिक सर्वसुविधायुक्त आवास की समुचित व्यवस्थाएँ की गई है । 19 से भी अधिक ट्रेनें श्रवणबेलगोला रेलवे स्टेशन पर पहुंचने की व्यवस्था होगी । 20 से 50 सदस्य समूह के रुकने की समुचित व्यवस्था की है ।

सभी को नि:शुल्क व सुस्वादु, संतुष्टि पूर्ण भोजन कराएंगे-

भोजन व्यवस्था उप-समिति के अध्यक्ष श्री विनोद बाकलीवाल मैसूर ने बताया कि प्रतिदिन एक लाख से अधिक श्रद्धालुओं के सुस्वादु भोजन की व्यवस्था 17 भोजनशालाओं के माध्यम से की जायेगी । अलग-अलग राज्यों के स्वादानुसार भोजन व नाश्ते का शानदार प्रबंध किया जा रहा है । सभी जगह आर.ओ. वाटर उपलब्ध होगा । सभी नगरों में अलग-अलग भोजनशालाएँ व छह सार्वजनिक भोजनशालाओं का निर्माण किया जायेगा । सभी का भोजन नि:शुल्क रहेगा । सम्पूर्ण देश के विभिन्न नगरों से भोजन सामग्री पहुँच रही है, कई टन भोजन सामग्री तेल, शक्कर, आटा, पोहे, गेहूँ, ज्वार, दाल, चावल, रसोई मसाले, केसर, काजू,

किशमिश, चाय-कॉफी, फल-सब्जी आदि हेतु घोषणाएँ कर श्रद्धालु यहां सामग्री भेज रहे हैं। आप अपने नगर में समाजजनों को एकत्रित कर सामग्री भेजने के लिए पारस चैनल पर गोम्मटेश्वर के प्रतिनिधि मंडल का नाम व नंबर प्राप्त कर सकते है।

जनरल सेक्रेटरी श्री सतीशचंद जैन दिल्ली एवं कलश आवंटन समिति के संयोजक श्री अशोक सेठी बेंगलूरू ने कलश आवंटन संबंधी जानकारी प्रदान करते हुए बताया कि आर्थिक रूप से विपन्नजनों के लिए भी नि:शुल्क गुच्छिका अब्जी कलश रखे गए हैं, देशभर में कलश बुकिंग का कार्य उत्साह से चल रहा है।

30 आचार्य व 400 पिच्छीधारी संत होंगे सम्मिलित –

त्यागी व्यवस्था उपसमिति के अध्यक्ष श्रीपाल गंगवाल गेवराई ने बताया कि महामस्तकाभिषेक महोत्सव में 30 आचार्यों सहित 400 पिच्छीधारी संतो व हजारों त्यागीजनों के सम्मिलित होने की संभावना है। 150 से अधिक चौके बुक हो चुके है। महोत्सव स्थल पर त्यागी नगर का निर्माण हो चुका है। संतो की व्यवस्था में कोई तकलीफ नहीं आएगी। सम्पूर्ण देशभर से दिगम्बर साधु सैकड़ों किलोमीटर का पद विहार कर श्रवणबेलगोला पधार रहे है।

द्वितीय सत्र में समागत पत्रकार-संपादकों का शॉल, स्मृति चिन्ह से सम्मान किया गया। विभिन्न पत्र पत्रिकाओं के विशेषांकों का विमोचन परम पूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्तिजी भट्टारक स्वामीजी व मंच पर विराजित अतिथियों ने किया। श्रीमती बबीता संदीप जैन दिल्ली द्वारा संपादित पुस्तक माइनोरिटी बेनेफिट का विमोचन भी किया गया। कार्यक्रम में पधारें अनेको पत्रिकाओं का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में अनेको पत्रकारों के साथ गोलालारीय समाज के जानी मानी पत्रिकाओं के संपादक भी उपस्थित रहे। दैनिक विश्व परिवार झाँसी से श्री प्रवीण जैन, जैन प्रचारक/वीर पत्रिका दिल्ली से प्रदीप जैन, छतरपुर टाइम्स से सनत कुमार जैन, टीकमगढ़ से सुभाष जैन, छतरपुर से नवनीत जैन बंटी ब्यूरो चीफ आई टी वी, गोलालारीय दर्शन से राजेन्द्र जैन 'बागो' आदि उपस्थित रहे।

संचालन राजेन्द्र जैन महावीर सनावद एवं आभार प्रदर्शन कॉर्पोरेशन बैंक के पूर्व निदेशक सी.ए. आदिशकुमार जैन दिल्ली ने किया।

मंच पर मुख्य अतिथि कन्नड़ साहित्यकार डॉ. हम्पा नागराजैय्या बैंगलुरु, विशेष अतिथि श्री संदीप जैन, उपसचिव अल्पसंख्यक मंत्रालय भारत सरकार दिल्ली, पी.वाय. राजेन्द्र कुमार, श्री अशोक बड़जात्या इन्दौर, पं. भरत काला मुंबई, एडवोकेट अनूपचंद जैन फिरोजाबाद, श्री शैलेष कापड़िया सूरत, श्री रावसाहिब पाटिल सोलापुर, श्री एस.एन. अशोक कुमार श्रवणबेलगोला उपस्थित थे। संचालन राजेन्द्र जैन 'महावीर' संपादक मंगल कलश बुलेटिन श्रवणबेलगोला सनावद ने किया। आभार प्रदर्शन संगोष्ठी व प्रचार कमेटी के संयोजक श्री स्वराज जैन टाइम्स ऑफ इण्डिया ने किया। देशभर से प्रकाशित समाचार पत्रों व विशेषांकों को श्री दिलीप पाटिल के सहयोग से डिस्प्ले बोर्ड पर प्रदर्शित किया गया।

पूज्य स्वामीजी के साथ किया महोत्सव स्थल का अवलोकन

सभी समागत पत्रकारों संपादकों को परमपूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्ति श्री चारुकीर्तिजी भट्टारक स्वामीजी व प्रचार उपसमिति अध्यक्ष श्री पुनीत जैन, संयोजक श्री स्वराज जैन आदि ने 400 एकड़ में फैले महोत्सव स्थल का निरीक्षण कराया व बताया कि किस तरह से मेला स्थल की व्यवस्था रहेगी। अत्याधुनिक अभूतपूर्व व्यवस्था को पूर्व के अनुभवों के आधार पर सुधार के साथ नियोजित किया गया है। सभी व्यवस्थाएँ उच्च स्तरीय व उत्कृष्ट थी, जिन्हें देखकर सभी ने संतुष्टि प्रकट की व अपने प्रश्नों का समाधान पूज्य स्वामीजी से प्राप्त किया।

– राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद

कार्यक्रम की झलकियाँ...

मोक्ष मार्ग में अहंकार के लिए स्थान नहीं

श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में विन्ध्यगिरि पर्वत के ऊँचे शिखर पर गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली की विशाल प्रतिमा दूर से दर्शनीय हो जाती है। फरवरी 2018 में, प्रत्येक 12 वर्ष के अंतराल में होने वाले महामस्तकाभिषेक महोत्सव के अवसर पर श्रद्धालुओं के द्वारा इस प्रतिमा का महामस्तकाभिषेक पहले जल से फिर पंचामृत से किया जाएगा।

महामस्तकाभिषेक का पहला उल्लेख 1398 ई0 के एक प्राचीन शिलालेख में मिलता है, भगवान बाहुबली के साथ बहुत सारी पौराणिक कथाएं जुड़ी है। कहा जाता है कि गंग राजवंश के मंत्री और सेनापति चामुण्डराय जिन्होंने इस प्रतिमा का निर्माण कराया उन्होंने स्वयं इस प्रतिमा का महामस्तकाभिषेक करने का निर्णय लिया लेकिन वे इस अहंकार से ग्रस्त हो गए कि उन्होंने एक विशाल प्रतिमा का ऊँचे शिखर पर निर्माण कराया है। कहा जाता है, कि जब उन्होंने प्रतिमा का मस्तकाभिषेक करना प्रारम्भ किया तो अभिषेक का जल भगवान बाहुबली की प्रतिमा की नाभि के नीचे नहीं पहुँच पाया और चामुण्डराय का प्रयास निष्फल हो गया, क्योंकि वे तो पूरी प्रतिमा का अभिषेक करना चाहते थे। चामुण्डराय को उनकी भूल बतलाने हेतु यक्षिणी, कुष्माण्डिनी ने एक गरीब वृद्ध महिला का भेष बनाया। उसने श्रद्धालुओं से भेंट कर भगवान बाहुबली की प्रतिमा का अभिषेक करने की अपनी इच्छा जताई। श्रद्धालुओं ने इस वृद्ध महिला की इच्छा को गंभीरता से नहीं लिया क्योंकि इस वृद्ध महिला के पास भगवान बाहुबली की विशाल प्रतिमा का अभिषेक करने के लिए जो पात्र था वह बहुत छोटा था, फिर भी जब उस महिला ने भगवान बाहुबली की प्रतिमा का अभिषेक किया तो उस पवित्र जल से पूरी प्रतिमा का अभिषेक हो गया और वह जल एक सरोवर में इकट्ठा हो गया और इसी से श्रवणबेलगोला नाम पड़ा अर्थात श्रवण का श्वेत सरोवर।

उक्त घटना से राजा चामुण्डराय का अहंकार टूट गया और उन्होंने मुख्य मंदिर के दरवाजे के बाहर भगवान बाहुबली की विशाल प्रतिमा के सामने यक्षिणी, कुष्माण्डिनी की भी प्रतिमा बनवाई। कहा जाता है कि जैन परम्परा में यक्ष और यक्षिणी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। वे धर्म सभा का आयोजन करते हैं। भगवान के केवल ज्ञान कल्याणक के परचात् यक्ष और यक्षिणी आते हैं। प्रत्येक कल्याण के लिए अलग - अलग जाति के दवों को जिम्मेदारी सौंपी जाती है। प्रत्येक तीर्थंकर के जीवन काल में होने वाली पाँच मांगलिक घटनाओं को पंच कल्याणक कहा जाता है और वे हैं - गर्भ कल्याणक, जन्म कल्याणक, दीक्षा कल्याणक केवल ज्ञान कल्याणक और निर्वाण कल्याणक। जब तीर्थंकर माता के गर्भ में आते हैं तो तीर्थंकर की माता की सेवा के लिए अष्ट कुमारियाँ आती है। तीर्थंकर के जन्म के समय उनका पाण्डुक शिला पर अभिषेक करने के लिए सौधर्म, ईशान, सनतकुमार और महेन्द्र इन चार स्वर्गों के इन्द्र देवताओं के साथ आते हैं। तीसरे दीक्षा कल्याण के समय लोकांतिक देव भी आकर वैराग्यवर्धक उपदेश देते हैं। जब तीर्थंकर को केवल ज्ञान होता है तो इन्द्र की आज्ञा से कुबेर समवशरण की रचना करता है। समवशरण की बारह सभाओं में यथा स्थान देव मनुष्य, तिर्यंच मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका आदि भगवान का उपदेशामृत पान करतें हैं। इन्ही पाँच कल्याणकों के प्रतीकात्मक स्वरूप महामस्तकाभिषेक के पूर्व पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आयोजन 7 फरवरी श्रवणबेलगोला में होगा।

जगद्गुरू स्वास्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक जी बताते हैं, कि भगवान बाहुबली तप और त्याग के प्रतीक है। वे वीतरागता की प्रतिमूर्ति हैं और दीक्षा आत्मशुद्धि के लिए होती है। शरीर तीन प्रकार के होते हैं - एक माता - पिता के द्वारा प्रदत्त स्थूल शरीर, दूसरा पूर्व जन्मों के कर्मों से निर्मित कर्मण शरीर और तीसरा तेजस शरीर। हम स्वयं अपने मन, वचन और कर्म की कार्बन कॉपी स्वयं के लिए तैयार करते है और अपने अगले जन्म में वैसे ही अपनी स्थूल काया में आत्मा स्वरूप अपनी पूर्व जन्म का प्रतिकृत स्थापित करते हैं, जैसे हार्डवेयर मे सॉफ्टवेयर। इसलिए यदि मुक्तिमार्ग पर चलना है तो पहले अपने सॉफ्टवेयर से पाप कर्मों को मिटाना होगा फिर उसमें पुण्य कर्मों को डालना होगा। तेजस शरीर एक ऊर्जा का स्रोत है, जिसका उपयोग ध्यान में करनें से पाप कर्मों का क्षय करने की शक्ति मिलती है।

महामस्तकाभिषेक में श्रद्धालु भगवान बाहुबली के प्रति अपनी विनयांजली अर्पित करते हैं, प्रतिफल में वे भगवान बाहुबली के आदर्शों को और अच्छे से समझ पाते हैं। अभिषेक के दौरान क्रोध, माया, लोभ, और अहंकार क्षय होना चाहिए। सन् 2006 में आयोजकों ने महामस्तकाभिषेक का पहला अवसर उस व्यक्ति को दिया जिसने श्रवणबेलगोला में बच्चों के अस्पताल का निर्माण कराया। अस्पताल की आधारशिला रखने के बाद जब उस व्यक्ति ने अस्पताल निर्माण की प्रतिज्ञा की, तब उन्हें भगवान बाहुबली का अभिषेक करने की अनुमति दी गई। मोक्ष मार्ग में अहंकार के लिए कोई स्थान नहीं है।

- स्वराज जैन, टाईम्स ऑफ इंडिया

प्राचीन और पावन जैन तीर्थ श्रवणबेलगोला

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रवण बेलगोला, ग्राम श्रवण बेलगोला तहसील चन्द्रराय पट्टन जिला हासन, कर्नाटक मे स्थित है। क्षेत्र में मंदिरों की संख्या बहुत है, पर्वत, तलहटी व ग्राम में अनेक जिनालय हैं, दो पहाड़ों विंध्यगिरी पर 644 एवं चन्द्रगिरि पर 200 सीढ़ीयां है। चढ़ने के लिए दोनों ही सीढ़ियां बहुत कम ऊंचाई की है। यहां डोली की व्यवस्था भी है। यहां दो हजार यात्रियों के ठहरने की व्यवस्था भी है। भोजन नि:शुल्क है।

श्रवण बेलगोला जैनों का अति प्राचीन और परम् तीर्थ है। जैन इतिहास में इसका विशिष्ट स्थान है। उत्तरवासी इसे जैनबद्री कहते है। यह जैन काशी और योमह तीर्थ नामों से भी प्रसिद्ध रहा है। एक हजार साल से भी अधिक पूर्व महामात्य चामुण्डा रायजी ने आचार्य श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती के सानिध्य में इन्द्रगिरी पर्वत पर भगवान बाहुबली की प्रतिमा प्रतिष्ठित कराई थी। यह मूर्ति लगभग 57 फीट ऊंची उत्तरमुखी, खड्गासान, संसार की अनुपम अद्वितीय एवं अतिशय सम्पन्न विशाल प्रतिमा है। इस भव्य मूर्ति का महामस्तिकाभिषेक 12 सालों के अन्तराल से होता है। यह दक्षिण भारत का प्रमुख जैन तीर्थ व पर्यटन स्थल है। चन्द्रगिरि पर्वत पर अनेक प्राचीन मंदिर एवं बहुमूल्य शिलालेख है जिनमें प्राचीन जैन इतिहास पर प्रकाश पड़ता है। यहां लगभग 580 शिलालेख जैनों की गौरव गाथा का उल्लेख करते हैं। श्री भट्टारक चारूकीर्तिजी का निवास जैन मठ है। विंध्यगिरि पर्वत समुद्र तल से 3500 फीट ऊंचा है। तलहटी में कल्याणी सरोवर के निकट से 644 सीढ़ियां बनी है। चन्द्रगिरि समुद्र तल से 3100 फीट ऊंचा तथा नीचे के मैदान से 175 फीट की ऊंचाई पर है। चढ़ने को 200 सीढ़ियां हैं। शिलालेखों से विविद होता है कि ईसा पूर्व की तीसरी शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक यह क्षेत्र अनेक जैन साधकों की साधना एवं मोक्ष स्थली रहा है।

श्रवण बेलगोला गांव के दोनो ओर दो मनोकर पर्वत विंध्यगिरि इन्द्रगिरि और चन्द्रगिरि है। गांव के बीच में कल्याणी सरोवर है। इन्द्रगिरि को यहां लोग बड़ा पहाड़ कहते हैं। इस पर चढ़ने के लिए 644 सीढ़ियां बनीं हुई है। इस पर्वत पर चढ़ते ही पहले ब्रह्मदेव मंदिर पड़ता है जिसकी अटारी में पार्श्वनाथ स्वामी की मूर्ति है। पर्वत की चोटी पर पत्थर की प्राचीन दीवार का घेरा है जिसके अन्दर बहुत से प्राचीन जैन मन्दिर है। घुसते ही चौबीस तीर्थंकर व सदि का एक छोटा से मंदिर है। इसमें चौबीस तीर्थंकर विराजमान है। इसकी स्थापना सन् 1648 में हुई थी। इस मंदिर में उत्तर पश्चिम में एक कुंड है। उसके पास दूसरा मंदिर है, इसमें भगवान चन्द्रप्रभु की पूजा होती है। मंदिर के सामने एक मान स्तंभ है। यह मंदिर लगभग 1673 ई0 में चेन्नगण ने बनवाया था।

इसके आगे चबूतरे पर बना हुआ ओदंगल व सदि नामक मंदिर है। यह कंकड़ का बना हुआ है। मंदिर के मध्यभाग में एक बहुत ही सुंदर कमल लटका हुआ है। श्री आदिनाथ भगवान की जो प्रतिमा दर्शनीय है। श्री शान्तिनाथ और नेमिनाथ की भी सुंदर प्रतिमाएं हैं।

पर्वत पर ही एक छोटे से घेरे में भगवान श्री बाहुबली गोम्मट स्वामी की विशालकाय मूर्ति विराजमान है। यहां पुरूष, महिला दोनों ही प्रक्षाल करते हैं। इसके सामने ही पूजा स्थल बना है। इसके बाहर भव्य संगतराशी का त्यागद् ब्रह्मदेव स्तंभ नामक सुंदर स्तंभ छत से ऊपर लटका हुआ है। इसे गंगतंश के राजमंत्री सेनापति चामुंडा ने बनवाया था। जो गोम्मट सार के रचियता श्री नेमिचंद्राचार्य के शिष्य थे। गुरू और शिष्य की मूर्तियां भी उस पर अंकित है। इस स्तम्भ के सामने ही गोम्मटेश की मूर्ति के प्रकार में घुसनें का अखण्ड द्वार है। वह एक शिला का बना है। इस द्वार के दाहिने ओर बाहुबली का छोटा मंदिर और बांई और उनके बड़े भाई भरत भगवान का मंदिर है, पास वाली चट्टान पर सिद्ध भगवान की मूर्तियां है। वहीं सिद्धर बसदि है, पास ही दो सुंदर स्तम्भ है। वहीं पर ब्रह्मदेव स्तंभ है।

श्री बाहुबली श्री तीर्थकर ऋषभदेव के पुत्र और भरत जी के भाई थे। राज्य के लिए दोनो भाइयों में युद्ध हुआ था। बाहुबली की विजय हुई परंतु उन्होंने राज्य अपने भाई को दे दिया और स्वयं तप कर सिद्ध परमात्मा हुए। भरतजी ने पोदनपुर में उनकी बृहत्काय मूर्ति स्थापित की। कालान्तर में उसके चहुंओर इतने कुक्कट सर्प हो गये की दर्शन करने दुर्लभ हो गये। गंगराजा सचमल्ल के सेनापति चामुंडराय अपनी मां की इच्छानुसार उनकी वन्दना करने के लिये चले परन्तु उनकी यात्रा अधूरी रही। इसलिए उन्होंने श्रवणबेलगोला में ही एक वैसी ही मूर्ति स्थापित करने का निश्चय किया। उन्होंने चन्द्रगिरि पर्वत पर, जिसे अब चामुंडराय शिला कहा जाता है, खड़े होकर एक स्वर्ण तीर मारा। वह इन्द्रगिरि पहाड़ की एक चट्टान में जा बसा। उस चट्टान में उनको गोम्मटेश्वर के दर्शन हुये। चामुण्डराय ने श्री नेमिचंद्राचार्य की देखरेख में मूर्ति बनवाई। यह घटना सन् 983 के लगभग की है। यह मूर्ति उत्तराभिमुख है और हल्के भूरे रंग की महीन कंकरीले पत्थर (ग्रेनाइट) को काटकर बनाई गई है। इस मूर्ति के चारों और छोटी देव कुलिकाएं हैं, इनमें तीर्थंकर भगवान की मूर्तियां विराजमान हैं।

- स्वराज जैन, टाईम्स ऑफ इंडिया

महामस्तकाभिषेक महोत्सव कमेटी की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सरिता एम.के. जैन चेन्नई ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रजी मोदी को आमंत्रित किया। प्रधानमंत्री महोदय ने कार्यक्रम में आने की स्वीकृति दी।

विद्यासागर संत शाला का लोकार्पण

ललितपुर में आचार्य विद्यासागर महाराज के 50वें संयम स्वर्ण महोत्सव के अंतर्गत आदिनाथ जैन मंदिर नई बस्ती में नवनिर्मित संतशाला जैनाचार्य "श्री विद्यासागर निलय" का मुनिश्री अभयसागरजी महाराज के ससंघ सानिध्य में श्रीमती गेंदाबाई धर्मपत्नी स्व. श्री चंपालालजी नीहरकलां, श्री प्रदीप कुमार, श्री प्रसन्न कुमार नीहरकलां ने लोकार्पण किया। इसे विधानाचार्य ब्रह्मचारी नितिन भैयाजी ने विधिपूर्वक कराया। मुनि श्री अभय सागरजी ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा संत समाज के पथ प्रदर्शक है। आज नईबस्ती में संतशाला के शुरू होने के साथ ही यहां पर संतों के ठहरने की व्यवस्था की है। समाज को अब संतजनों का सानिध्य मिलता रहेगा।

डॉ. ज्योति जैन को मिला सुधा सागर पुरस्कार

राजस्थान की मार्बल नगरी मदनगंज-किशनगढ़ में धर्म सेवा, समाज सेवा, साहित्य सेवा के साथ साथ जैन धर्म संस्कृति के संरक्षण में अपना योगदान देने वाली डॉ. ज्योति जैन को मुनि पुंगव सुधा सागर महाराज पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पुज्य मुनि सुधा सागर जी महाराज ने कहा कि यह व्यक्ति का नहीं जिनवाणी आराधकों का सम्मान है। आज समाज अनेक विसंगतियों का सामना कर रहा है। आचार्य शिरोमणि विद्यासागर महाराज के संयम स्वर्ण जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में उनके संपूर्ण साहित्य एवं उस पर आधारित विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुनि सुधा सागर सम्मान प्राप्त कर डॉ. ज्योति जैन ने इसे अपने संपूर्ण जीवन की सर्वोत्तम उपलब्धि माना है।

दि. जैन परम्परा का अंतर्राष्ट्रीय महामहोत्सव - गोम्मटेश्वर का महामस्तकाभिषेक

श्रवणबेलगोला का नाम आते ही मन-मस्तिष्क में एक ऐसी छवि उभरकर आती है जो तन-मन को हर्षित करती है। पंथ-ग्रंथ-संत सबसे परे एक श्रद्धा की सूरत जो सभी दिगम्बर श्रमण संस्कृति के उपासकों के मन में बिना किसी भेदभाव के समाहित है, वह तीर्थ है श्रवणबेलगेला व यहाँ के गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी। यह प्रतिमा दिगम्बर जैन जगत में वर्णित प्रतिष्ठा पाठ को अपने अन्दर समाहित करती हुई उन प्रतिष्ठा मंत्रों व स्थापना निक्षेप के सिद्धान्त को साक्षात प्रदर्शित करती है कि प्रतिष्ठा मंत्रों में अभूतपूर्व शक्ति है जो पाषाण में परमात्मा को प्रतिष्ठित कर देती है। भगवान बाहुबली हमें बोलते हुए प्रतीत होते है। उनका अंग-अंग दिगम्बरत्व का सन्देश देता हुआ प्रतीत होता है।

सबसे सुंदर यानि गोम्मटेश - जब इस तीर्थ के नेतृत्वकर्ता पूज्य कर्मयोगी जगद्गुरू स्वस्तिश्री चारूकीर्ति भट्टारक स्वामीजी से चर्चा होती है तो वे प्रतिमा का वर्णन करते हुए प्रसन्नचित हो जाते हैं। वे बताते हैं कि भगवान बाहुबली स्वामीजी को 'गोम्मट देव', 'गोम्मट जिन','गोम्मटेश्वर जिनम्', 'बाहुबली', 'भुजबली', सुनंदातनय', 'विंध्य गिरिष' आदि नामों से पुकारा जाता है। श्रवणबेलगोला व कन्नड़ के लोकगीतों में भगवान बाहुबली की आराधना के गीत गाए जाते हैं। हर शुभकार्य के पहले भगवान बाहुबली को स्मरण किया जाता है, यह उनका लोकपूज्य होने का प्रमाण है। गोम्मट का अर्थ होता है सबसे सुंदर।

श्रवणबेलगोला 'विश्वतीर्थ' है। यहाँ आने वाले पर्यटक जो देश-विदेश के होते हैं, घूमने आते हैं लेकिन श्रद्धा से झुककर अपना शीश नवाते नजर आते है और बाहुबली का मौन आशीष पाकर अपने आप को धन्य करते हैं। ऐसे अनुपम, अद्भुत, अलौकिक विश्वतीर्थ पर जहाँ दिगम्बरत्व की कीर्ति विश्वव्यापी होती है ऐसा अनुपम पर्व है गोम्मटेश का महामस्तकाभिषेक। इस उत्सव में सम्पूर्ण जैन समाज सहित दिगम्बर साधु प्रतिमा के सम्मुख नतमस्तक होते हैं।

हमारे जीवन काल में यह अवसर 7 फरवरी 2018 से 25 फरवरी 2018 तक आने वाला है। इस अभूतपूर्व आयोजन में सम्मिलित होने के लिए देशभर के आचार्य, मुनि, आर्यिका संघ निरंतर पद विहार कर रहे है। सम्पूर्ण देश में वे श्रवणबेलगोला के महामस्तकाभिषेक का सन्देश प्रदान कर रहे हैं। राष्ट्रगौरव, वात्सल्य वारिधि आचार्यश्री वर्धमानसागरजी महाराज ससंघ सहित 84 पिच्छीधारी संत श्रवणबेलगोला में 2017 का चातुर्मास संपन्न कर सान्निध्य हेतु श्रवणबेलगोला में प्रवासरत है। 'अहिंसा से सुख-त्याग से शांति, मैत्री से प्रगति - ध्यान से सिद्धि' का सन्देश वे अपने जीवन की चर्या से प्रदान कर रहे है। हम सभी की यह जिम्मेदारी है कि दिगम्बर जैन जगत के इस सार्वभौमिक आयोजन जो भारत सरकार, कर्नाटक सरकार के साथ मिलकर दिगम्बर जैन कुम्भ के रूप में संचालित हो रहे इस आयोजन में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान कर अपनी श्रद्धा का अर्घ समर्पित करें। भगवान बाहुबली समाज में समन्वय, सद्भावना, सामर्थ्य, शक्ति, सम्पूर्णता, समर्पणता, शांति, श्रद्धा, संतुलन, श्रेष्ठता, सामाजिकता, स्वात्मोपलब्धि, स्वानुभव, सात्विकता, सहजता, विश्व शांति के प्रतीक है जो अनेक अवसरों पर सिद्ध हो चुका है। आयोजन हेतु समाज, शासन-प्रशासन, निरंतर सक्रिय है। श्रवणबेलगोला का कण-कण महामस्तकाभिषेक हेतु उत्साह से परिपूर्ण है। तैयारियों का क्रम जारी है, बैठकों का दौर निरंतर चल रहा है। सभी के आतिथ्य के लिए विभिन्न समितियाँ अपना दायित्व निभाकर देशभर के आतिथ्य हेतु लालायित है।

पूज्य स्वामीजी की भावना है कि आयोजन में दिगम्बर जैन जगत का प्रत्येक परिवार सम्मिलित हो, भगवान बाहुबलीजी को भक्ति कलश समर्पित करे, हम सभी का दायित्व बनता है कि हम इस भक्ति पर्व में जो दिगम्बर श्रमण परम्परा का गौरव उत्सव है, को सफलतापूर्वक सम्पन्न करें।

गोम्मटेश का स्पर्श एक सुखद अनुभव

दिगम्बर जैन जगत में गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामीजी का बारह वर्ष में होने वाला महामस्तकाभिषेक एक सार्वभौमिक आयोजन है, जिसका इंतजार प्रत्येक श्रद्धालु को होता है। गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली की प्रतिमा का आकर्षण कहें, अतिशय कहें या उनकी मौन साधना की सर्वोच्च स्थिति कहें, श्रवणबेलगोला जाते ही अभूतपूर्व शांति का अनुभव जैन-जैनेत्तर सभी करते है। श्रवणबेलगोला के दर्शन के बाद जैन दर्शन, श्रमण संस्कृति के प्रति श्रद्धा का जो भाव प्रकट होता है, वह जीवन में सम्यक राह का राही बनने में सहयोगी होता है। 1037 वर्ष प्राचीन गोम्मटेश्वर की प्रतिमा के दर्शन, उन्हें स्पर्श करने की उत्कंठा सभी को होती है। वहाँ पहुँचने वालों के लिए उनका स्पर्श करना अभूतपूर्व सुख का अनुभव कराता है।

दिगम्बर जैन एकता का महापर्व गोम्मटेश्वर महामस्तकाभिषेक

पंथों के चक्कर में हम निर्ग्रन्थों के मार्ग को स्वयं अपने हाथों से पलीता लगा रहे हैं, स्वयं के प्रचार के चक्कर में हम भूल जाते है कि हमारे तीर्थंकरों ने 'पंथ' नहीं 'पथ' बतलाया था, 'पंथ' के चक्कर में पड़कर हम अपने ग्रंथों की मूल भावना से दूर होते चले जा रहे है। गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक की घोषणा 1 फरवरी 2017 को जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारूकीर्तिजी भट्टारक स्वामीजी ने की। उपस्थितजनों में हर्ष की लहर के साथ सम्पूर्ण देश में उत्साह का वातावरण बन गया कि सभी को बाहुबली के दर्शन के लिए श्रवणबेलगोला जाना है। महामस्तकाभिषेक की घोषणा होते ही श्रवणबेलगोला में तो मानों महामस्तकाभिषेक प्रारंभ हो गया। देशभर के विद्वानों का संस्कृत विदुषी महिलाओं का राष्ट्रीय महिला सम्मेलन, राष्ट्रीय जैन विद्वत सम्मेलन, राष्ट्रीय जैन युवा सम्मेलन, अंतराष्ट्रीय प्राकृत कांफ्रेंस और अ.भा.पत्रकार सम्मेलन सहित अनेकों मण्डल विधान, पूजन आराधना, 84 पिच्छीधारियों का भव्य चातुर्मास व प्रतिदिन आयोजनों की श्रृंखला ने कभी अक्षर से कभी भक्ति से, भावना से भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक कर सारे देश को संदेश दे दिया कि हे गोम्मटेश ! आप हमारे दिगम्बरत्व की ध्वजा पताका के प्रथम मोक्षगामी हो, आप तीर्थंकर नहीं लेकिन तीर्थंकर से कम नहीं, आपने मौन से जो उपदेश दिया है वह आज भी सार्थक है। बिखरी हुई जैन एकता को आप ही एकसूत्र में पिरों कर हमें एक कर सकते हो वह आपके प्रतिनिधि परम् पूज्य जगद्गुरू कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्तिजी भट्टारक स्वामीजी ने दिखा भी दिया कि गोम्मटेश के दरबार में ''हम सब एक है'' यहां कोई भेद नहीं यहां तो भेदज्ञान के साथ वीतराग दिगम्बरत्व की चर्चा है, आईये हम सब गोम्मटेश्वर के भेदज्ञान को समझे और आपस के भेदों-पंथों को नष्ट कर गोम्मटेश का महामस्तकाभिषेक कर अपना जीवन धन्य करें।

हम सभी श्रद्धालु श्रवणबेलगोला व गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबलीजी को प्रख्यात गीतकार-संगीतकार स्व. रवीन्द्र जैन की अन्तदृष्टि से देखने का प्रयास करें। उन्होंने अपने भजन में कहा था कि-

'सब णमोकार का जाप करें, और पाठ करें भक्तामर का।
नित नियमित पालें पंचशील, और त्याग करें आडम्बर का।।
हम जैनी अपना धर्म जैन, इतना ही परिचय केवल हो,
हम यही कामना करते है।''

विश्वभर में जन्में, दिगम्बरत्व के प्रति आस्था-श्रद्धा-विश्वास रखने वालों के लिए महामस्तकाभिषेक अलौकिक क्षण है, जिन्हें इसका मौका मिल रहा है। वे अपनी-अपनी दृष्टि निर्मल करें और विश्वतीर्थ पर इस अनुपम आयोजन में अपनी श्रद्धा का अर्घ्य समर्पित करे। इसका मौका मिल रहा है। वे अपनी-अपनी दृष्टि निर्मल करें और विश्वतीर्थ पर इस अनुपम आयोजन में अपनी श्रद्धा का अर्घ्य समर्पित करे।

आशा है, हम पंथ की दृष्टि से, हम अपनी अन्तर्दृष्टि से इस अलौकिक विश्ववंदनीय मुद्रा को देखेंगे तो हमें यह प्रतिमा 'सम्यक दर्शन' भी करा सकती है, जो हमारे मोक्ष मार्ग का कारण बनेगी। ऐसे प्रथम मोक्षमार्गी के प्रति हम अपनी श्रद्धा से भरकर संस्कारों के शंखनाद में अपना योगदान देंगे और सैकड़ों पिच्छीधारी संतो की उपस्थिति में महामस्तकाभिषेक करने का महान पुण्य अर्जित करेगें। इसी आशा के साथ, अंत में एक विचार

एक हो जाऐगें तो बन जाऐगें चाँद-सूरज।
बिखरे हुए तारों से कहाँ रोशनी होगी।

हम सभी आएँ और दिगम्बर संस्कृति के गौरव उत्सव में सम्मिलित होकर अपना योगदान सुनिश्चित करें।

- राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद

SUFAL VAASTU
Guidance for Successful life

Satyendr Jain
Vaastu Consultant (GVSRC Member)
Record Holder of ASIA Book
& India Book in Vaastu field

समस्या आपकी, समाधान हमारा-

* व्यापार/नौकरी की वृद्धि में अवरोध दूर कर आशातीत सफलता प्राप्त करें।
* निवास/व्यापार स्थान की भूमि ऊर्जा का परीक्षण। क्या यह आपकी प्रगति में सहायक है या अवरोधक है?
* सकारात्मक भूमि ऊर्जा के निर्माण द्वारा शांति व सुख-समृद्धि में वृद्धि।
* बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिए घर में यथा योग्य स्थान का चयन।
* अविवाहित युवक-युवतियों के विवाह होने में अवरोधक तत्वों का वास्तु द्वारा निवारण।
* व्यापार का रुका हुआ पेमेन्ट अथवा कर्ज का वास्तु द्वारा निवारण।
* वास्तु द्वारा बहुत ही आसानी से अपने जीवन के महत्वपूर्ण लक्ष्यों को प्राप्त करें।

Land Energy • Vaastu Registry
Elements Vaastu • Colour Vaastu
Mathemetical Vaastu • Layout Vaastu
Pyramidology • Mantrology • Numerology

5, Dhanlaxmi Society, Opp. C.M.C., Odhav Road, Ahmedabad - 382 415 (Guj.)
Mob. 9898020636 (w), 9510374203 (w), E-mail : sufalvaastu@gmail.com

गोलालारीय दर्शन समाज के 4500 परिवारों तक नियमित भेजा जा रहा है। संभव है डाक व्यवस्था या आपका पता सही न होने के कारण पत्रिका आपको व आपके रिश्तेदारों तक पत्रिका नहीं पहुंचती है तो उनका नाम व पता पोस्टकार्ड पर लिखकर पत्रिका कार्यालय पर भेज देवें या 9424013136 पर दोप. 4 से रात्रि 10 तक संपर्क कर सकते है या अपने पता का एसएमएस कर सकते है।

बा. ब्र. अखिल कुमार जैन
एम.ए., एल.एल.बी.
अधिष्ठाता श्री दि. जैन उदासीन आश्रम द्वारा सम्पादित

जैन तिथि दर्पण श्री वीर निर्वाण संवत् 2544

अमर ग्रंथालय, श्री दिगम्बर जैन उदासीन आश्रम एवं अभिनंदन प्रिंटिंग प्रेस से साभार ❋ गोलालारीय दर्शन द्वारा प्रकाशित

महीना	१ प्रतिपदा		२ द्वितीया		३ तृतीया		४ चतुर्थी		५ पञ्चमी		६ षष्ठी		७ सप्तमी		८ अष्टमी		९ नवमी		१० दशमी		११ एकादशी		१२ द्वादशी		१३ त्रयोदशी		१४ चतुर्दशी		१५/३० पूर्णि./अमा.		घटी–बढ़ी तिथियों का स्पष्टीकरण
ईसवी सन् २०१७–१८	वार	ता.	वार	ता.	वार	ता.	वार	ता.	वार	ता.	वार	ता.	वार	ता.	वार	ता.	वार	ता.	वार	ता.	वार	ता.	वार	ता.	वार	ता.	वार	ता.	वार	ता.	
कार्तिक शुक्ल २०७४	शु.	२०	श.	२१	र.	२२	सो.	२३	मं./बु.	२४/२५	गु.	२६	शु.	२७	श.	२८	र.	२९	सो.	३०	मं.	३१	बु.	१ नवम्बर	गु.	२	शु.	३	श.	४	५ मंगलवार को, १५–१ शामिल शनिवार को १६ दिवसीय शुक्ल पक्ष
मार्गशीर्ष कृष्ण	श.	४	र.	५	सो.	६	मं.	७	बु.	८	गु.	९	शु.	१०	श.	११	र.	१२	सो.	१३	मं.	१४	बु.	१५	गु.	१६	शु.	१७	श.	१८	....
मार्गशीर्ष शुक्ल	र.	१९	सो.	२०	मं.	२१	बु.	२२	गु.	२३	शु.	२४	श./र.	२५/२६	सो.	२७	मं.	२८	बु.	२९	गु.	३०	गु.	३०	शु.	१ दिसम्बर	श.	२	र.	३	७ शनिवार को ११–१२ शामिल गुरुवार को
पौष कृष्ण	सो.	४	मं.	५	बु.	६	बु.	६	गु.	७	शु.	८	श.	९	र.	१०	सो.	११	मं.	१२	बु.	१३	गु.	१४	शु.	१५	श./र.	१६/१७	सो.	१८	३–४ शामिल बुध को १४ शनिवार को
पौष शुक्ल	मं.	१९	बु.	२०	गु.	२१	शु.	२२	श.	२३	र.	२४	सो.	२५	मं.	२६	बु.	२७	गु.	२८	शु.	२९	श.	३०	र.	३१	सो.	१ जन. २०१८	सो.	१	१४–१५ शामिल सोमवार को
माघ कृष्ण	मं.	२	बु.	३	गु.	४	शु.	५	श.	६	र.	७	सो.	८	मं.	९	बु.	१०	गु.	११	शु.	१२	श.	१३	र.	१४	सो.	१५	मं.	१६	....
माघ शुक्ल	बु./गु.	१७/१८	शु.	१९	श.	२०	र.	२१	सो.	२२	मं.	२३	बु.	२४	गु.	२५	शु.	२६	श.	२७	श.	२७	र.	२८	सो.	२९	मं.	३०	बु.	३१	१ बुधवार को १०–११ शामिल शनिवार को
फाल्गुन कृष्ण	गु.	१ फरवरी	शु.	२	श.	३	र.	४	सो.	५	मं.	६	बु.	७	गु.	८	शु.	९	श.	१०	र	११	सो.	१२	मं.	१३	बु.	१४	गु.	१५	....
फाल्गुन शुक्ल	शु.	१६	श.	१७	र.	१८	सो.	१९	मं.	२०	बु.	२१	गु.	२२	शु.	२३	श.	२४	र.	२५	सो.	२६	मं.	२७	बु.	२८	बु.	२८	गु.	१ मार्च	१३–१४ शामिल बुधवार को
चैत्र कृष्ण	शु.	२	श.	३	र.	४	सो.	५	मं.	६	बु.	७	गु.	८	शु.	९	श./र.	१०/११	सो.	१२	मं.	१३	बु.	१४	गु.	१५	शु.	१६	श.	१७	९ शनिवार को
चैत्र शुक्ल सं. २०७५	र.	१८	सो.	१९	मं.	२०	बु.	२१	गु.	२२	शु.	२३	श.	२४	श.	२४	र.	२५	सो.	२६	मं.	२७	बु.	२८	गु.	२९	शु.	३०	श.	३१	७–८ शामिल शनिवार को
वैशाख कृष्ण	र.	१ अप्रैल	सो.	२	मं.	३	बु.	४	गु.	५	शु.	६	श.	७	र.	८	सो.	९	मं.	१०	बु./गु.	११/१२	शु.	१३	श.	१४	र.	१५	र.	१५	११ बुधवार को १४–३० शामिल रविवार को
वैशाख शुक्ल	सो.	१६	मं.	१७	बु.	१८	गु.	१९	शु.	२०	श.	२१	र.	२२	सो.	२३	मं.	२४	बु.	२५	गु.	२६	गु.	२६	शु.	२७	श.	२८	र.	२९	११–१२ शामिल गुरुवार को
प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण	सो.	३०	मं.	१ मई	बु./गु.	२/३	शु.	४	श.	५	र.	६	सो.	७	मं.	८	बु.	९	गु.	१०	शु.	११	श.	१२	र.	१३	सो.	१४	मं.	१५	३ बुधवार को
प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल	बु.	१६	गु.	१७	शु.	१८	शु.	१८	श.	१९	र.	२०	सो.	२१	मं.	२२	बु.	२३	गु.	२४	शु.	२५	श.	२६	र.	२७	सो.	२८	मं.	२९	३–४ शामिल शुक्रवार को
द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण	बु.	३०	गु.	३१	शु.	१ जून	श.	२	र.	३	सो./मं.	४/५	बु.	६	गु.	७	शु.	८	श.	९	र.	१०	सो.	११	मं.	१२	मं.	१२	बु.	१३	६ सोमवार को १३–१४ शामिल मंगलवार को
द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल	गु.	१४	शु.	१५	श.	१६	र.	१७	सो.	१८	सो.	१८	मं.	१९	बु.	२०	गु.	२१	शु.	२२	श.	२३	र.	२४	सो.	२५	मं./बु.	२६/२७	गु.	२८	५–६ शामिल सोमवार को १४ मंगलवार को
आषाढ़ कृष्ण	शु.	२९	श.	३०	र.	१ जुलाई	सो.	२	मं.	३	बु.	४	गु.	५	शु.	६	श	७	र.	८	सो.	९	मं.	१०	बु.	११	गु.	१२	शु.	१३	३०–१ शामिल शुक्रवार को
आषाढ़ शुक्ल	शु.	१३	श.	१४	र.	१५	सो.	१६	मं.	१७	बु.	१८	गु.	१९	शु.	२०	श.	२१	र.	२२	सो.	२३	मं.	२४	बु.	२५	गु.	२६	शु.	२७	....
श्रावण कृष्ण	श.	२८	र.	२९	सो./मं.	३०/३१	बु.	१ अगस्त	गु.	२	शु.	३	श.	४	र.	५	सो.	६	सो.	६	मं.	७	बु.	८	गु.	९	शु.	१०	श.	११	३ सोमवार को ९–१० शामिल सोमवार को
श्रावण शुक्ल	र.	१२	सो.	१३	सो.	१३	मं.	१४	बु.	१५	गु.	१६	शु.	१७	श.	१८	र.	१९	सो.	२०	मं.	२१	बु./गु.	२२/२३	शु.	२४	श.	२५	र.	२६	२–३ शामिल सोमवार को १२ बुधवार को
भाद्रपद कृष्ण	सो.	२७	मं.	२८	बु.	२९	गु.	३०	शु.	३१	श.	१ सितम्बर	र.	२	सो.	३	मं.	४	बु.	५	गु.	६	शु.	७	शु.	७	श.	८	र.	९	१२–१३ शामिल शुक्रवार को
भाद्रपद शुक्ल	सो.	१०	मं.	११	बु.	१२	गु.	१३	शु.	१४	श.	१५	र.	१६	सो.	१७	मं.	१८	बु.	१९	गु.	२०	शु.	२१	श.	२२	र.	२३	सो./मं.	२४/२५	१५ सोमवार को, १६ दिवसीय शुक्ल पक्ष
आश्विन कृष्ण	बु.	२६	गु.	२७	शु.	२८	शु.	२८	श.	२९	र.	३०	सो.	१ अक्टूबर	मं.	२	बु.	३	गु.	४	शु.	५	श.	६	र.	७	सो.	८	मं.	९	३–४ शामिल शुक्र. को ३०–१ श. मंगल को
आश्विन शुक्ल	मं.	९	बु.	१०	गु.	११	शु.	१२	श.	१३	र./सो.	१४/१५	मं.	१६	बु.	१७	गु.	१८	शु.	१९	श.	२०	र.	२१	सो.	२२	मं.	२३	बु.	२४	६ रविवार को १६ दिवसीय शुक्ल पक्ष
कार्तिक कृष्ण	गु.	२५	शु.	२६	श.	२७	र.	२८	सो.	२९	मं.	३०	बु.	३१	गु.	१ नवम्बर	गु.	१	शु.	२	श.	३	र.	४	सो.	५	मं.	६	बु.	७	८–९ शामिल गुरुवार को
कार्तिक शुक्ल	गु.	८	शु.	९	श.	१०	र.	११	सो.	१२	मं.	१३	बु.	१४	गु./शु.	१५/१६	श.	१७	र.	१८	सो.	१९	मं.	२०	बु.	२१	गु.	२२	शु.	२३	८ गुरुवार को १६ दिवसीय शुक्ल पक्ष

प्रमुख व्रत विधान

अष्टाह्निका
का. शु. ८ शनि २८ अक्टूबर १७ से का.शु. १५ शनि ०४ नव. १७ तक।
फा. शु. ७ गुरु २२ फरवरी २० से फा. शु. १५ गुरु १ मार्च १८ तक।
आ. शु. ८ शुक्र २० जुलाई १८ से आ.शु. १५ शुक्र २७ जुलाई १८ तक।

षोडशकारण
पौष शु. १५ सोम १ जन. १८ से फा. कृ. १ गुरु १ फर. १८ तक।
फा. शु. १५ गुरु १ मार्च १८ से चै. कृ. १ रवि १ अप्रैल १८ तक।
आ. शु. १५ रवि २६ अगस्त १८ से आ. कृ. 1 बुध 26 सित. १८ तक।

दशलक्षण
माघ शु. ४ रवि २१ जन. १८ से माघ शु. १४ मंगल ३० जन. १८ तक।
चैत्र शु. ४ बुध २१ मार्च १८ से चैत्र शु. १४ शुक्र ३० मार्च १८ तक।
भाद्र. शु. ५ शुक्र १४ सित. १८ से भाद्र शु. १४ रवि २३ सित. १८ तक।

पुष्पांजलि
माघ शु. ५ सोम २२ जन. १८ से माघ शु. ९ शुक्र २६ जन. १८ तक।
चैत्र शु. ४ बुध २१ मार्च १८ से चैत्र शु. ९ रवि २५ मार्च १८ तक।
भाद्र शु. ५ शुक्र १४ सित. १८ से भाद्र शु. ९ मंगल १८ सित. १८ तक।

रत्नत्रय
माघ शु. १३ सोम २९ जन. १८ से माघ शु. १५ बुध ३१ जन. १८ तक।
चैत्र शु. १३ गुरु २९ मार्च १८ से चैत्र शु. १५ शनि ३१ मार्च १८ तक।
भाद्र शु. १३ शनि २२ सित. १८ से भाद्र शु. १५ सोम २४ सित. १८ तक।

[illegible]

[illegible]

रोहिणी व्रत
मार्गशीर्ष कृष्ण ३
मार्गशीर्ष शुक्ल १५
पौष शुक्ल १३
माघ शुक्ल १०
फाल्गुन शुक्ल ९
चैत्र शुक्ल ६
वैशाख शुक्ल ४
प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल २
द्वितीय ज्येष्ठ कृष्ण ३
आषाढ़ कृष्ण १२
श्रावण कृष्ण ११
भाद्रपद कृष्ण ८
आश्विन कृष्ण ६
कार्तिक कृष्ण ३

मुक्तावली व्रत
कार्तिक शुक्ल ३
कार्तिक शुक्ल ११
मार्गशीर्ष कृष्ण ११
मार्गशीर्ष शुक्ल ३
भाद्रपद शुक्ल ७
आश्विन कृष्ण ६
आश्विन कृष्ण १३
आश्विन शुक्ल ११
कार्तिक कृष्ण १२

सौजन्य से - निशांत जैन, फिटनेस वर्ल्ड, एल.जी.3, के.के. बापना आर्केड, जंजीरवाला चौराहा, इन्दौर फोन : 0731-2432833 मो.: 94250-58636

आपकी स्मृतियां सदा
हमें आपकी उपस्थिति
का अहसास दिलाती है

अवसान : 27-9-2007

पू. पिताजी स्व. श्री नरेन्द्र जैन
(सायकल वाले)

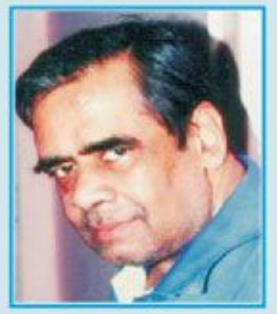

श्रद्धा नमन :
श्रीमती चंदा जैन
निशांत-रेशु जैन
नमिता-कमलेश जैन
नम्रता-निदेश जैन
चार्मी, चिदेश जैन
आयुषी, अशिता जैन
उत्कर्ष, वेदांत जैन
समस्त सिंघई परिवार
एवं स्नेहीजन

फर्म :
फिटनेस वर्ल्ड
एल.जी.3, के.के. बापना आर्केड
जंजीरवाला चौराहा, इन्दौर
फोन : 0731-2432833
मो.: 94250-58636

ऐलीमेन्ट टेक्नोलॉजी
ऐलीमेन्ट सेनिटेशन
105, के.के. बापना आर्केड
जंजीरवाला चौराहा, इन्दौर
फोन : 0731-4020999
मो.: 94250-58636

परामर्श प्रमुख

श्री कैलाशचंदजी जैन, झाँसी
श्री जिनेन्द्रकुमारजी जैन, अहमदाबाद

प्रधान संपादक
सिंघई राजेन्द्र जैन, 9424013136

सह संपादिका
श्रीमती अनुपमा-रजनीश जैन, 9009066884
श्रीमती साधना-सुनील जैन, 8602696165

कोषाध्यक्ष
सुधेशकुमार जैन, 9827254111

प्रबंध संपादक
राजेन्द्रकुमार जैन, सायकलवाले 9425353972
खुशालचंद जैन, 9302123879
कोमलचंद जैन, 9329524227

संयोजक एवं प्रकाशक
बाहुबली जैन, 9827247847

समाज के श्रेष्ठीजनों से पुन: सादर अनुरोध है कि समाज की एकमात्र सामाजिक पत्रिका गोलालारीय दर्शन के निरंतर प्रकाशन के लिए आप शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक, संरक्षक, विशेष सहयोगी बनकर पत्रिका को आर्थिक संबल प्रदान करें।

शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक अपना संक्षिप्त परिचय सपत्नीक फोटो सहित एवं संरक्षक तथा विशेष सहयोगी सदस्य अपना संक्षिप्त परिचय फोटो सहित भेजे ताकि प्रकाशन किया जा सके।

सदस्यता शुल्क

शिरोमणि संरक्षक (अ.जा.)	21000/-
परम संरक्षक (अ.जा.)	11000/-
संरक्षक (अ.जा.)	5100/-
विशेष सहयोगी (अ.जा.)	2100/-
सहयोगी सदस्य	1100/-
सहयोग राशि	500/-

आप 'गोलालारीय दर्शन' के बैंक खाते में सहयोग राशि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के खाता क्रं. 63048875855
IFSC Code: SBIN0030134
में चेक द्वारा ही जमा कर स्लीप की फोटोकॉपी व अपना नवीन फोटो मय जानकारी के हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड व कार्यालय पते पर अवश्य भेजें ताकि आपको रसीद भेज कर आपका विवरण प्रकाशित किया जा सके।
नोट - 8 मार्च 2014 से अन्य शहरों से जमा की जाने वाली राशी पर बैंक शुल्क न्यूनतम 50 रु. कर दिया है।

अत: बायोडाटा शुल्क मल्टीसिटी चेक के द्वारा ही पत्रिका के पते पर भेजे।

विज्ञापन दर (कलर)

अंतिम पेज	15000/-
फुल पेज (अंदर)	11000/-
1/2 पेज	5000/-
1/4 पेज	3000/-
मांगलिक बधाई फोटो सहित	2000/-
शोक संदेश फोटो सहित	1000/-
बॉयोडाटा फोटो सहित	300/-

बायोडाटा, समाचार व अन्य कोई जानकारी पत्रिका में प्रकाशित करने हेतु गोलालारीय दर्शन 64, न्यू देवास रोड, इन्दौर अथवा श्री राजेन्द्रकुमार जैन हीरालाल एण्ड संस, 16 महारानी रोड, इन्दौर पर भेंजे।

108 श्री आस्तिक्यसागरजी महाराज की पिच्छी श्री फूलचंद संजय कुमार जैन को प्राप्त हुयी।

इन्दौर, सुधेश जैन। चर्या शिरोमणि 108 विशुद्धसागरजी महामुनिराज ससंघ की पिच्छी परिवर्तन एवं चातुर्मास कार्यक्रम भव्यता के साथ 22 अक्टूबर को इन्दौर में संपन्न हुआ। इस अवसर पर महापुण्यशाली व्यक्तित्व, समाज गौरव, धार्मिक प्रवृत्ति, सरल हृदय, तप साधना चर्याशिरोमणि श्रावकों को मुनिराजों की पिच्छी प्राप्त करने का महापुण्यशाली अवसर प्राप्त हुआ। समाज गौरव मुनिश्री 108 आस्तिक्यसागरजी महाराज की पिच्छी लेने का परम सौभाग्य समाजश्रेष्ठी श्री फूलचंदजी संजयकुमार जैन, साउथ तुकोगंज वालो को प्राप्त हुआ। श्री संजय जैन समवशरण ग्रुप, साउथ तुकोगंज के सक्रिय सदस्य है व चातुर्मास समिति के मुख्य पदाधिकारी होने के नाते आपने अपने दायित्व का निर्वाह पूर्ण कुशलता व मनोयोग से कर चातुर्मास कराने में अपनी महती भूमिका निभायी है। इस अवसर पर समाज के सदस्यों ने श्री फूलचंद संजयकुमार के पिच्छी प्राप्त करने की अनुमोदना की।

णमोकार मंत्र की महिमा

जैन धर्म की महिमा, तुम गाते रहो, गुन गुनाते रहो।
मंत्र नवकार का तुम सुमरण करो, सुमरण करो।
अनादिकाल से महामंत्र है ये।
पाप कर्मों का क्षय करने वाला है ये।
जिस जिसने इसका सुमरण किया।
जीवन उसका एक दम बदल सा गया।
अंजन चोर ने इस महामंत्र को जपा।
देव गणों ने उसकी रक्षा किया।
इस महामंत्र को जपकर वो मोक्ष गया, वो मोक्ष गया।
मंत्र णमोकार की ऐसी महिमा अनेक, महिमा अनेक।
वीतरागी बनो त्यागी व्रती बनो
आचार्य उपाध्याय साधु बनो।
अष्ट कर्मों को नष्ट करते रहो, करते रहो।
मंत्र नवकार को तुम जपते रहो, जपते रहो।
पांच पद से ये मूल महामंत्र बना।
इससे ही चौरासी मंत्रों की रचना हुई।
तभी तो ये मूल मंत्र कहा गया, हाँ कहा गया।
संजय गा रहा जैन धर्म की महिमा।
जैन धर्म की महिमा, तुम गाते रहो, गुन गुनाते रहो।
मंत्र नवकार की तुम सुमरण करो, सुमरण करो।

- संजय जैन, मुंबई

गोम्मटेश्वर में विद्वत सम्मेलन साआनंद संपन्न।

इन्दौर, अनुपमा जैन। गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी के महामस्तकाभिषेक महोत्सव 2018 के पूर्व आयोजित सम्मेलन श्रृंखला में राष्ट्रीय जैन विद्वत सम्मेलन 1 अक्टूबर से 5 अक्टूबर तक श्रुतकेवली भद्रबाहु मण्डप, गोम्मटनगर, श्रवणबेल्गोला में संपन्न हुआ जिसमें देश भर की विद्वत संस्थाओं के 578 से अधिक विद्वानों ने सपरिवार सहभागिता कर एक इतिहास रचा। सभी विद्वानों ने गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली के चरणों में बैठकर श्रवणबेल्गोला में चातुर्मासरत आचार्यश्री वर्द्धमानसागरजी महाराज सहित 84 पिच्छीधारी संतों के सान्निध्य व जगतगुरु कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्तिजी भट्टारक स्वामी श्रवणबेलगोला के नेतृत्व में अपनी भावना को लिपिबद्ध कर गद्य पद्य आलेखों के माध्यम से गोम्मटेश्वर का 'अक्षराभिषेक' कर अपनी भक्ति, श्रद्धा, आस्था, विश्वास का अर्घ समर्पित कर बताया कि गोम्मेटश्वर के चरणों में केवल दिगम्बरत्व की जय जयकार है। यहां सकीर्ण मानसिकता व पंथवाद का कोई स्थान नहीं है। दिगम्बरत्व का विश्व मान्य तीर्थ श्रवणबेलगोला दिगम्बरत्व का महासागर है जो हमें मुक्ति पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा देता है। गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली महामस्तिकाभिषेक महोत्सव की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती सरिता एम.के. जैन, कार्याध्यक्ष एस. जितेन्द्रकुमार, सचिव सतीशचन्द्र जैन व राष्ट्रीय जैन विद्वत सम्मेलन के अध्यक्ष अशोक बड़जात्या इन्दौर, सर्वाध्यक्ष डॉ. श्रेयांशकुमार बडौत, अनुपम जैन, इन्दौर, मुख्य संयोजक नवीन जैन गाजियाबाद, संचालक ब्र. जयकुमार जैन 'निशांत', संयोजक सुरेन्द्र जैन बाकलीवाल व सहसंयोजक दिनेशकुमार जैन इन्दौर व अन्य समाजश्रेष्ठी के सान्निध्य में विद्वत सम्मेलन साआनंद संपन्न हुआ। विद्वत सम्मेलन की अद्भुत सफलता के अवसर पर इन्दौर में शानदार सांस्कृतिक आयोजनों के द्वारा शहर का नाम रोशन करने वाली प्रतिभाओं का सम्मान दिगम्बर जैन महासमिति के रा. अध्यक्ष श्री अशोक बड़जात्या, संयोजक श्री सुरेन्द्र बाकलीवाल, सहसंयोजक श्री दिनेशकुमार जैन के सान्निध्य में संपन्न हुआ। इस अवसर पर नगर के अनेक समाज श्रेष्ठियों ने कार्यकर्ताओं की भूरि भूरि प्रशंसा की।

आठवीं पुण्यतिथि

जन्म दिनांक : 27.09.1928
स्वर्गवास दिनांक : 15.11.2009

पूज्य पिता श्री पं. सागरमलजी जैन
विदिशा

की पुण्य स्मृति पर हम सभी की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि

श्रीमती सुधा-विवेक जैन विदिशा
ममता-समर्थ जैन विदिशा
श्रीमती सुनीता जैन
(प्राचार्य शा. हाई स्कूल ग्वालटोली, सीहोर)
डॉ. पंकज जैन
(विभागाध्यक्ष - शा. महिला पोली. महा. सीहोर)

एवं समस्त परिजन, स्व. पं. श्री सागरमल जैन स्मृति न्यास विदिशा

77, ड्रीम सिटी, सेंट एनी स्कूल के पास, सीहोर मो.: 9827046409, 8823881855

भजनों में मौलिकता लायें ।

प्राय: देखा जाता है कि कहीं धार्मिक कार्यक्रम में भजन संध्या हो या मंदिर में भजन कीर्तन का अवसर, हम सब बड़े भक्ति भाव से गीत संगीतमय प्रस्तुतियों में लीन हो जाते है । भजन और स्तुति हमारे मन को पवित्र भावों से भरकर प्रभु के और समीप ले जाने में मदद करते है । भावपूर्ण भजन केवल सुनने में ही अच्छे नहीं लगते, वे हमें शांति का अनुभव भी कराते हैं । भजनों के द्वारा भक्ति करने की परम्परा बहुत प्राचीन है और आज भी अनवरत चली आ रही है किंतु समय के साथ इनके स्वरुप में काफी बदलाव आया है । आज भजन प्राय: अपनी मौलिकता खोकर फिल्मी गीतों की नकल मात्र होने लगे हैं जिनमें अधिकतर फूहड़, भोंडे एवं अश्लील शब्दों को थोड़ा सा हेरफेर कर भजनों का स्वरुप दे दिया जाता है । क्या ऐसे भजनों को गाते समय और सुनते समय हमारा मन अपेक्षित शांति और पवित्रता का अनुभव कर पाते है कि भजन के मूल फूहड़ गीत का मुखड़ा ही मन मस्तिष्क में घूमता है। इस प्रकार के भजनों में वह सात्विकता नहीं रह पाती न ही ऐसा भजन मन में वीतरागता भर पाता है । अच्छा हो कि भजन रचियता भजन का मूल स्वरुप पुनर्जीवित कर भावपूर्ण और वीतराग छवि से ओतप्रोत भजन रचें । यदि फिल्मी गीतों पर आधारित ही लेना हो तो इतना अवश्य करें कि वे फूहड़ गीतों पर न होकर शालीन गीतों पर आधारित हो, जो भजन के साथ संगत हो सके और भजन के मूल उद्देश्य को कायम रख सकें ।

कई नगरों में बन्द हुए महिला संगीत के नाम पर फूहड़ नाच-गाने

आजकल एक बड़ी बहस चल रही है । मुद्दा है विवाह समारोहों में महिला संगीत के नाम पर परोसी जाने वाली अश्लील और पश्चिमी संस्कृति के प्रदर्शन करती फूहड़ नृत्य प्रस्तुतियां बंद कर उनके स्थान पर हमारे पारम्परिक गीतों और भजनों के कार्यक्रम रखे जाएं । विषय असंगत नहीं है । वास्तव में आजकल विवाह समारोहों से हमारे पारंपरिक रीति रिवाज और देसी संस्कृति की खुशबू गायब होती जा रही है । विवाह के कई दिनों पूर्व से ही शादी वाले घर में ढोलक की थाप के साथ पारंपरिक बन्ना बन्नी गाने की स्वर लहरियां पूरे मोहल्ले में उत्सुकता और उत्साह जगा देती थी । बगैर गीत संगीत के कोई रस्म पूरी नहीं होती थी । विवाह में एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का दर्शन दिखाई देता था, आज सब कुछ बदल गया है । पारंपरिक रीति रिवाजों की खाना पूर्ति करके अधिकांश समय वस्त्राभूषणों की खरीददारी, ब्यूटी पार्लर के चक्कर लगाने और महिला संगीत हेतु पश्चिमी संगीत के नृत्यों की प्रैक्टिस में ही निकल जाता है । संगीत संध्या के नाम पर बच्चों से लेकर बड़ो द्वारा ऐसे गीतों और नृत्यों की प्रस्तुतियां दी जाती है जिनका विवाह की रस्मों से कोई लेना देना नहीं होता । वे किस तरह का मनोरंजन है । क्या हम अपने देसी और पारम्परिक मनोरंजन के स्थान पर कानफोडू डीजे के फूहड़ गीत संगीत को महिला संगीत का नाम देकर अपने आप को आधुनिक कहलाने का ढोंग नहीं कर रहे ? विवाह अपने आप में विशुद्ध पारंपरिक क्रिया है जिसमें हर परिवार और समाज की संस्कृति के दर्शन होते हैं । इसमें पश्चिमी सभ्यता के रीति रिवाजों को अपनाते हुए हम अपने आपको ही भूलते जा रहे हैं । धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से यह हमारे लिए अपनी जड़ों से दूर करने जैसा है । विवाह संपन्न होने वाले घर में आज के युवा वर्ग के साथ उनके माता पिता, रिश्तेदार महिला संगीत के नाम पर एक दो महिने तक नृत्य सिखाने के बहाने डांस ट्रेनर कमर में हाथ डालकर नचाते हैं इससे आपके परिवार को आखिर क्या हासिल होता है ? क्या शादी ब्याह में स्टेज पर कुछ ठुमके लगाने से क्या वे नृत्य की राष्ट्रीय ऊचाइयों के आसपास भी पहुंच पायेंगे ? फिर क्यों परिवार के लोग नृत्य के नाम पर समाज जनों के सामने फूहड़ डांस का प्रदर्शन कर अपने घर की गरिमा दांव पर लगाने में फक्र अनुभव करते है । वैसे शालीनता पूर्ण पारंपरिक नृत्य व लोकनृत्य भी काफी सुन्दर होता है, उसी के आधार पर यदि आप विवाह समारोह में महिला संगीत का आयोजन करते है तो वह काफी सुरुचिपूर्ण व शालीन हो सकता है । समाज के प्रबुद्धजनों से इस विषय पर विचार करने की अपेक्षा है । इस विषय पर आपके विचार व प्रतिक्रिया हमें भेंजे ताकि पत्र में उन्हें उचित स्थान दिया जा सके ।

जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन का 22वां रा. अधिवेशन भोपाल के महावीर मेडिकल कॉलेज (मेम्स) में

राजेश जैन लड्डू, भोपाल । महावीर मेडिकल कॉलेज (मेम्स), भोपाल में दिनांक 13 व 14 जनवरी 2018 को दि. जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन की 22वें राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन हो रहा है, जिसकी तैयारियां अंतिम चरणों में है जहां एक ओर भोपाल के जैन समाज एवं सोशल ग्रुपों में इस गरिमामयी भव्य आयोजन की चर्चाएं हो रही है वही आयोजन समिति के पदाधिकारी भी आयोजन को ऐतिहासिक बनाने के लिए जी तोड़ मेहनत कर रहे हैं । अधिवेशन के प्रमुख संरक्षक श्री सुनील जैन '501' के नेतृत्व एवं श्री सुभाष जैन काला जी के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय अधिवेशन के प्रतिनिधि मंडल ने आज भोपाल के महापौर श्री आलोक शर्मा से मुलाकात कर अधिवेशन के संबंध में अब तक हुई प्रगति की जानकारी देते हुए कहा कि भोपाल में इतना बड़ा आयोजन सम्पन्न होने जा रहा है । महापौर श्री शर्मा ने अधिवेशन में उपस्थिति की सहर्ष सहमति प्रदान की और कहा कि विगत 25 वर्षों से समाजसेवा में जुड़े श्री सुभाष जी काला साहब की मेहनत का ही परिणाम है इस राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन भोपाल में हो रहा है, उन्होंने भावना प्रकट की कि इस अधिवेशन में माननीय मुख्यमंत्री जी को आमंत्रित करने वे स्वयं जाएंगे । इस अवसर पर महापौर श्री आलोक शर्मा ने इंदौर से प्रकाशित फेडरेशन की मुख्य पत्रिका युग अस्तित्व बोध के अधिवेशन विशेषांक का विमोचन भी किया । इस अवसर पर सोशल ग्रुप फेडरेशन के संस्थापक अध्यक्ष श्री प्रदीपजी कासलीवाल ने दूरभाष पर माननीय महापौर जी को धन्यवाद देते हुए आभार प्रकट किया, साथ ही फेडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हँसमुख जी गांधी ने भी आयोजन समिति को बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की । इसके पूर्व महावीर मेडिकल कॉलेज (मेम्स) के विशाल प्रांगण में जैन समाज की सर्वोच्च समाजसेवी संस्था दि. जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन के 22वें राष्ट्रीय अधिवेशन 2018 को सफल बनाने के लिए आमंत्रित सदस्यों की एक बैठक आयोजित की गयी । आयोजन के प्रमुख संरक्षक श्री सुनील जैन '501' के मार्गदर्शन कार्यक्रम चेयरमेन श्री सुभाष काला जी की अध्यक्षता, महावीर मेडिकल कॉलेज के सचिव डॉ राजेश जैन के मुख्य आतिथ्य एवं आयोजन समिति के समस्त पदाधिकारियों की गरिमामय उपस्थिति में जवाहर चौक जैन मंदिर प्रांगण में मध्य रीजन के सभी ग्रुपों के साथ आवश्यक बैठक का आयोजन कर उन्हें अधिवेशन संबंधित जानकारियां दी । बैठक में सभी सोशल ग्रुपों के सदस्यों ने अपने विचार रखें एवं अधिवेशन को भव्य ओर ऐतिहासिक बनाने हेतु अपनी ओर से पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया । बैठक का संचालन प्रदीप जैन छाबड़ा ने एवं आभार व्यक्त नरेंद्र बड़जात्या ने किया ।

हम बदलें-युग बदले

हम बदलें युग बदलें, युग के हमी प्रणेता है ।
कर्मठता के वीर सिपाही, युग के सही विजेता है ।

युवक शक्ति मत कम आंको, मत कहो युवक में राह नहीं है,
किन्तु तुम्हारे मन में झांकों, तुम्हें युवक की चाह नहीं है,
कर्म भूमि के युवा पुजारी, सारे युग के नेता है,

हम बदलें, युग बदले...

युवकों से युग का जीवन है, युवक युगों का त्राता है,
युवकों की मत करो ठिठोली, युवक युगों का निर्माता है,
संघर्षों के जीवन रण में, उत्कृष्ट प्रेम के प्रेरेता है ।

हम बदलें, युग बदले...

निर्माता है निर्जन में, राहों के, युवकों को ललकार चाहिये,
मत देखो नफरत से भाई, उन्हे आपका प्यार चाहिये,
जहां चाह है, वही राह है, हर राहों के ज्ञेता है ।

हम बदलें, युग बदले...

आशाओं के अंबर से अदभुत, चांत सितारे ला सकते है,
स्वर्णिम सपने पूरे करने, कांटो में भी जा सकते है,
द्रढ़ निश्चय के देव दूत हैं, दृढ़ता दिव्य दिवेता है ।

हम बदलें, युग बदले...

यौवन युग का दर्पण है, सक्रियता है पूर्ण विकास,
युवक तिमिर की रजनी ढाकर, लायेंगे फिर नया प्रकाश,
कर्म योगी निष्काम जगत के, निष्काम कर्म विक्रेता हैं ।

हम बदलें, युग बदले...

सुखनंदनकुमार जैन ''प्रशांत''
अहमदाबाद

गोलालारीय समाज की प्रथम साख संस्था का रजत जयंती स्नेह सम्मेलन

देश की प्रथम गोलालारीय समाज सदस्यों द्वारा संचालित पार्श्वनाथ सहकारी साख संस्था का गठन आज से 25 वर्ष पूर्व 1993 में हुआ था । आज यह संस्था अपना रजत जयंती वर्ष अपने सदस्यों के साथ हर्षोल्लासपूर्वक मना रही है । समाज के वरिष्ठ सदस्य श्री रमेशचंदजी क्लर्क कालोनी के मार्गदर्शन में श्री राजेन्द्रकुमारजी 'सावकलवालों' के संस्थापक अध्यक्ष के सानिध्य में 62 सदस्यों के साथ संस्था प्रारंभ की गयी थी । संस्था द्वारा समय समय पर पुरस्कार व स्नेह सम्मेलन का आयोजन किया जाता रहा है । दिनांक 21 जनवरी को संस्था का रजत जयंती महोत्सव नगर के प्रसिद्ध धर्मस्थल नवग्रह जिनालय पर रखा गया है । यहां सदस्यों को पुरस्कार वितरण, सांस्कृतिक व मनोरंजक गेम्स के साथ स्नेह भोज का आयोजन किया गया है । 25 वर्षों में संस्था ने उत्तरोत्तर प्रगति की है । संस्थापक अध्यक्ष के पश्चात श्री प्रमोद कुमार जैन 'पेठेवाले' व पूर्व अध्यक्ष श्री विजयकुमार जैन 'बियावानीवाले' ने संस्था को नवीन ऊंचाईयां प्रदान की । श्री विजयकुमारजी के कार्यकाल में सर्वाधिक ऋण राशि का वितरण व शत प्रतिशत ऋण भुगतान से संस्था आर्थिक रुप से सुदृढ़ हुई है । वर्तमान में सभी सदस्यों को परिवार कल्याण योजना का लाभ प्रदान किया जा रहा है जिसमें सदस्य की मृत्यु पश्चात् परिजनों को 11000/- की राशि संस्था द्वारा प्रदान की जाती है । वर्तमान अध्यक्ष श्री सुधेशकुमार जैन एवं संचालक मंडल द्वारा सदस्यों को 1 लाख रुपये की ऋण राशि देने का प्रावधान रखा गया है । जिससे सदस्यों को तत्काल आर्थिक संबल उपलब्ध रहेगा। इन्दौर नगर के समाजजनों से निवेदन है कि वे संस्था के सदस्य बनने हेतु संस्था कार्यालय 64 न्यू देवास रोड़ पर प्रति रविवार 11 से 1 बजे के मध्य श्री पवनकुमार जैन संपर्क कर सकते है ।

* विनम्र श्रद्धांजली *

स्व. हरकचंदजी जैन के मंझले **पुत्र अमित जैन** का हृदयघात होने से अल्पायु में 11 दिसम्बर 2017 को इन्दौर में निधन हो गया ।

गोलालारीय दर्शन परिवार की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।

नोट - विधिवत जानकारी प्राप्त होने पर ही शोक संदेश का सचित्र प्रकाशन किया जावेगा।

हार्दिक शुभकामनाएँ

डॉ. अंशकुमार जैन, टीकमगढ़ के सुपुत्र श्री आशीष-राखी जैन को दिनांक 8.08.17 को रक्षाबंधन के दिन 'आर्जव जैन' के जन्म पर हार्दिक शुभकामनाएँ ।

विशेष सहयोगी -

डॉ. अंशकुमार जैन
टीकमगढ

श्री अरविंदकुमार जैन
जामनेर, गुना

सुप्रसिद्ध विचारकों एवं मनीषियों की दृष्टि में गोम्मटेश्वर बाहुबली

आज श्रवणबेलगोला में केवल जैन ही नहीं अपितु जैनेतर तथा विदेशी एवं कला के प्रेमी लाखों लोग भगवान बाहुबली स्वामी की दिव्य मूर्ति के दर्शन के लिए आते हैं । भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि 'भगवान गोम्मटेश्वर बाहुबली की प्रतिमा विश्व में सबसे ऊंची और अद्वितीय है।'

महामना काका कालेकर ने इस मूर्ति का दर्शन करके कहा था ''एक ही पत्थर से उकेरी गई ऐसी सुन्दर मूर्ति संसार में कोई दूसरी नहीं है। इतनी बड़ी मूर्ति भी इतनी सलोनी और सुन्दर है कि भक्ति के साथ-साथ प्रेम की भी अधिकारी हो गई है ।''

इन्दिरा गांधी ने अपने पिता पंडित जवाहरलाल नेहरू के साथ इस मनोरम प्रतिमा का दर्शन करते हुए प्रतिक्रिया व्यक्त की थी कि ''यह मूर्ति शांति और सुन्दरता का संगम है। इस मूर्ति को देखने के बाद मन में एक नई भावना पैदा होती है । यह मूर्ति हजार वर्षों में शांति, मैत्री और अहिंसा का मार्ग दिखा रही है ।'' महामस्तिकाभिषेक 2006 का उद्‌घाटन करते हुए तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम डॉ. अब्दुल कलाम ने कहा था कि 'भगवान बाहुबली की प्रतिमा त्याग, संयम और अहंकार की निवृत्ति का सम्यक प्रतीक है । दिगम्बरत्व में खड़ी यह प्रतिमा सभी प्रकार की इच्छाओं पर विजय प्राप्ति के साथ पूर्ण स्वतंत्रता का पथ दर्शन देती है। यह संदेश सारे देश में फैलें।' उपराष्ट्रपति भैरोसिंह शेखावत ने 6 फरवरी 2006 को राज्याभिषेक का शुभारंभ करते हुए श्रवणबेलगोला में कहा था कि 'भगवान बाहुबली का जीवन त्याग और तपस्या का संदेश देता है ।' पूर्व प्रधानमंत्री श्री एच डी देवगौड़ा ने तो 2006 में स्वयं उपस्थित होकर व्यवस्थायें देखी थी । आचार्य श्री वीरसागरजी महाराज कहा करते थे कि 'मनुष्य पर्याय को पाकर जिसने तीन तीर्थों के दर्शन नहीं किये उसका जीवन व्यर्थ चला गया 1. सिद्धक्षेत्रों में सम्मेदशिखरजी, 2. अतिशय क्षेत्रों में श्रवणबेलगोला के भगवान बाहुबली और 3. साधुओं में चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज ।' महाकवि भगवज्जिसेनाचार्य जी ने भगवान बाहुबली को लक्ष्य करके इस प्रकार लिखा है – जगति जयिनमेनं येगिनं योगिवर्यैः, अधिगत महिमानं मानितं मानीनीयैः । स्मरति हृदि नितान्तं यः सशन्तान्तरात्मा, भजति विजय लक्ष्मीपाशु जैनीमजय्यम् ।। गोम्मटसार ग्रंथ में मूर्ति के निर्माता श्री चामुण्डराय को आशीर्वाद देते हुए नेमीचंद्राचार्य जी ने लिखा है – जेण विणिम्मिय-पडिया-वयणं-सबट्ठ सिद्धि देवेहिं। सत्व परकोहि-जोगेहिं दिट्ठ सो गोम्यटो जयऊ।। अर्थात् जिसके द्वारा निर्मापित की गई मूर्ति के मुख का सर्वार्थसिद्धि के देवों और परमावधि-सर्वावधि ज्ञान के धारक योगीन्द्रों ने दर्शन किया है वह गोम्मटराजा जयवंत हों। चामुण्डराय का खास नाम 'गोम्मट' होने से उनके आराध्य बाहुबली स्वामी को 'गोम्मटेश्वर' यह नाम प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ ।

गोम्मटेश्वर द्वार के बाई तरफ एक पाषाण पर शिलालेख है जो कि शक संवत् 1102 का है । उसमें कन्नड़कवि पं. वोप्पण ने मूर्ति की महिमा को प्रकट करते हुए एक काव्य कहा है, जिसका अर्थ यह है कि 'जब मूर्ति आकार में बहुत ऊंची और बड़ी होती है, तब प्राय: उसमें सौन्दर्य का अभाव रहता है । यदि मूर्ति बड़ी भी हुई और उसमें सौन्दर्य भी रहा तो भी उसमें दैवी चमत्कार का होना असंभव-सा है, किन्तु आश्चर्य है कि यहां इस गोम्मटेश्वर की मूर्ति में तीनों का मेल दिख रहा है । अर्थात् यह मूर्ति 57 फुट ऊंची होने से बहुत बड़ी है, सौन्दर्य में बेजोड़ है और दैवी चमत्कार को प्रकट करने वाली है । अत: यह प्रतिबिम्ब संपूर्ण विश्व द्वारा पूजित होने से अपूर्व है ।

यहां मन नहीं बल्कि यहां की प्राकृतिक सुषमा में डूबता या खो जाता है । श्रवणबेलगोला की इस पावन धारा को प्रकृति-नदी ने लीला-धाम ही बना लिया है । यहां जो भी आता है, वह विस्मय-विमुग्धा हुए बिना नहीं रहता । आज का विश्व अनेक व्याधियों में, विविध आपत्तियों में निमग्न होकर पीड़ा के कारण कष्ट पा रहा है । वह यदि भगवान गोम्मटेश्वर बाहुबली के चरणों का आश्रय ले, तो उसे प्रभु की मौनी मूर्ति यह उपदेश देगी कि 'यदि तुम्हें शांति चाहिए, तो मेरे पास आ जाओ और मेरे समान जगत के मायाजाल का त्याग कर प्रकृति प्रदत्त मुद्रा को धारण करो। क्रोध, मान, माया, लोभ का परित्याग करो, फिर देखो तुम्हारा दुख दूर कैसे नहीं होता है ।'

यहां के शिलालेख भव्य, प्राचीन मंदिर और विशाल मूर्तियां न केवल जैन दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं , प्रत्युत भारत की प्राचीन सभ्यता, संस्कृति, कला, पुरातत्व और इतिहास की ये सब बहुमूल्य धरोहर है । गोम्मटेश्वर बाहुबली की मूर्ति का स्वयं में एक इतिहास है । साथ ही दिव्य चमत्कारों और भव्य आधि दैविक प्रतीकों से उसका अभिन्न सम्बंध है, यह सब धार्मिक आस्थाओं की फलश्रुति हो सकती है परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं कि श्रवणबेलगोला की यह मूर्ति उदात्त लावण्य युक्त कलाकृति स्वयं में पूर्णता की प्रतीक है । आस्थावना श्रद्धालु ही नहीं कला मर्मज्ञ और सौन्दर्य प्रेमी भी उसे देख अघाते नहीं हैं।

महामस्तकाभिषेक 2018 : इस बार महामस्तिकाभिषेक का आयोजन 7 फरवरी 2018 में शुरु हो रहा है । जिसकी तैयारियां जोरों पर है । बारह वर्ष बाद होने वाले इस महामस्तिकाभिषेक का आयोजन परम पूज्य वात्सल्य वारिधि, पूज्य जैनाचार्य श्री 108 वर्धमानसागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य में, कर्मयोगी भट्टारक स्वस्ति श्री चारुकीर्तिजी स्वामी के मार्गदर्शन में संपन्न होने जा रहा है । इस अवसर पर अनेक साधु संतों का समागम भी प्राप्त होगा । कर्नाटक सरकार भी इस आयोजन को सफल बनाने में जुटी हुयी है । महोत्सव का सम्पूर्ण कवरेज विभिन्न चैनलों पर लाइव दिखाया जायेगा । अभिषेक होने के समय, अभिषेक के बाद एवं आरती के समय विभिन्न आकर्षक रुप दिया जायेगा, जो मनोरम, मनभावन होगा । इस वृहद आयोजन में राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, मुख्यमंत्री, अनेक केन्द्रीय व राज्यमंत्रियों के साथ सैकड़ों की संख्या में जैन संत व लाखों जैन जैनेतर श्रद्धालुगण बारह वर्ष बाद होने वाले इस महामस्तिकाभिषेक में पूरी श्रद्धा आस्था के साथ पहुंचने की उम्मीद है । आयोजन को लेकर पूरे भारतवर्ष में अनेक समिति, उपसमितियों का गठन कर तैयारियां अंतिम दौर में चल रही है । महामस्तिकाभिषेक को लेकर देशभर में उत्साह की लहर व्याप्त है । श्रवणबेलगोला में विराजमान परम पूज्य आचार्य श्री वर्धमानसागरजी महाराज ने अपने संदेश में कहा है कि 'श्रवणबेलगोला श्रमणों की प्रिय भूमि रही है । यहाँ अंतिम श्रुतकेवली भद्रबाहु स्वामी समाधि को प्राप्त हुए । भगवान बाहुबली जो प्रथम मोक्षगामी हैं उनकी अति मनोज्ञ कृति यहां से संपूर्ण विश्व को अहिंसा से सुख, त्याग से शांति, मैत्री से प्रगति, ध्यान से सिद्धि का संदेश प्रदान कर रही है । भगवान बाहुबली का महामस्तिकाभिषेक विश्व शांति का अनूठा अनुष्ठान होगा व विश्व शांति की प्रक्रिया में अपना योगदान देगा ।

महामस्तिकाभिषेक को ऐतिहासिक बनाने में कर्मयोगी स्वस्तिश्री भट्टारक चारूकीर्ति जी स्वामी का श्रम देखने योग्य हैं, उनके नेतृत्व में यह महत महनीय आयोजन एक नया आयाम स्थापित करेगा । यद्यपि भगवान बाहुबली तीर्थंकर नहीं थे फिर भी उनकी मूर्तियों की परंपरा अतीव प्राचीन है, यह उनके अप्रतिम त्याग और तपश्चरण का ही प्रभाव है जो कि आज उनकी मूर्ति की स्थापना से दिगम्बरत्व के गौरव को सर्वतोमुखी कर रहा है और आगे भी करता ही रहेगा । यह गोम्मटेश्वर बाहुबली की मूर्ति भी युग युग तक असंख्य प्राणियों को मोक्षमार्ग का संदेश सुनाती ही रहेगी ।

– डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

बायोडॉटा प्रारुप का विवरण

1.	क्रमांक	9.	वर्ण
2.	प्रत्याशी का पूरा नाम	10.	व्यवसाय
3.	स्वयं / मामा का गोत्र	11.	वार्षिक आय
4.	जन्म दिनांक	12.	कुंडली मिलान
5.	जन्म समय (घड़ी अनुसार)	13.	मंगली
6.	जन्म स्थान	14.	पत्र व्यवहार का पता
7.	शिक्षा	15.	फौन / मोबाईल नं.
8.	कद / वजन	16.	प्रत्याशी का ईमेल

प्रत्याशी का नवीन फोटो

1.	001		
2.	प्रशांत अशोक कुमार जैन		
3.	गुड़ारे / सिंघई		
4.	26.06.1993		
5.	2.05	11.	5.16 लाख
6.	गौर, टीकमगढ़	12.	हाँ
7.	बी.ई. (एम.ई.)	13.	नहीं
8.	5'6''/62 कि.	14.	ग्राम पोस्ट गौर जिला टीकमगढ़
9.	गोरा		
10.	असि. मैनेजर एस्सार ग्रुप	15.	7583086123, 9630908558

1.	002		
2.	अविन राजेन्द्र जैन		
3.	पंचरतन/फमीश		
4.	24.07.89		
5.	23.44	11.	24.50 लाख
6.	इन्दौर	12.	-
7.	एम.बी.ए., बी.ई (सी.एस)	13.	-
8.	5'6''	14.	डीकेएन-230, स्कीम नं. 74-सी विजय नगर, इन्दौर
9.	गोरा		
10.	सर्विस-जेन्सार, पुणे	15.	9424013136

1.	003		
2.	अमित कुमार प्रकाशचन्द्र जैन		
3.	पंचरतन/भंडारी		
4.	11.10.1991		
5.	20.25	11.	7.50 लाख
6.	शाजापुर	12.	हाँ
7.	बी.ई, आई.टी	13.	नहीं
8.	5'5''/55 कि.	14.	325/2, आदर्श कॉलोनी, शाजापुर
9.	गोरा		
10.	सर्विस-पूने	15	8839551061, 9826725323

1.	004		
2.	ऋषभ एन.के जैन		
3.	पवैया/-		
4.	16.12.1991		
5.	11.03	11.	-
6.	सीधी	12.	-
7.	बी.ई (ई.सी.)	13.	-
8.	5'10''	14.	41/92, आवासीय कॉलोनी वैढ़ान जिला सिंगरौली
9.	गोरा		
10.	सर्विस-पूना	15.	9993060460, 9424772200

1.	005		
2.	अभिषेक दिलीप कुमार जैन		
3.	पंचरतन/वैद्य		
4.	12.03.1988		
5.	14.10	11.	6 लाख
6.	अहमदाबाद	12.	हाँ
7.	एम.फार्मा	13.	-
8.	5'11''/61कि.	14.	122/953, गुजरात हाउसिंग बोर्ड, हटकेश्वर, पुलिस थाने के पास, अहमदाबाद
9.	गोरा		
10.	सर्विस-अहमदाबाद	15.	9824061985, 07922732880

1.	006		
2.	आकाश डॉ. आजाद जैन		
3.	पंचरत्न/देदादपूरी		
4.	07.10.90		
5.	06.45	11.	-
6.	अहमदाबाद	12.	-
7.	एम.जी. रेडियालॉजी	13.	-
8.	6'/-	14.	7, पी एंड टी कॉलोनी सोसायटी मणी नगर, अहमदाबाद
9.	साफ		
10.	सर्विस	15	9824546891, 9408761347

1.	007		
2.	साहिल स्वराज जैन		
3.	पटवारी/गोयल		
4.	01.09.1983		
5.	19.55	11.	10 लाख
6.	दिल्ली	12.	-
7.	एम.बी.ए, बी.कॉम	13.	-
8.	5'7''/60 कि.	14.	ए/55/33, बलवीर नगर एक्स., गली नं. 16, शाहदरा, दिल्ली-32
9.	गोरा		
10.	सर्विस-बैंक मैनेजर	15.	011-22320454, 09899614433

1.	008		
2.	रवीश रवीन्द्रकुमार जैन		
3.	सिंघई/धमसैया		
4.	23.08.1990		
5.	14.37	11.	6.50 लाख
6.	झांसी	12.	नहीं
7.	बी.टेक (आई.टी.)	13.	नहीं
8.	5'8''	14.	जैन मंदिर के पास, तिलक नगर झांसी
9.	गेहुँआ		
10.	सर्विस-डेल, बैंगलोर	15.	9451832713

1.	009		
2.	आनंद अजीतकुमार जैन		
3.	वैद्य/पटवारी		
4.	02.10.90		
5.	13.30	11.	6.00 लाख
6.	इन्दौर	12.	-
7.	बी.ई, साफ्टवेयर इंजी.	13.	नहीं
8.	6'7''/63 कि.	14.	257, डी.के.एन. स्कीम नं. 74 विजय नगर, इन्दौर
9.	साफ		
10.	सर्विस	15	8817440416, 9893768169

1.	010		
2.	अंचल अनिलकुमार जैन		
3.	पंचरतन/बिलकआ		
4.	08.04.90		
5.	08.40	11.	3.00 लाख
6.	इन्दौर	12.	-
7.	बी.फार्मा, एमबीए	13.	नहीं
8.	5'5''	14.	355, स्कीम नं. 103 केशर बाग रोड, इन्दौर
9.	गेहुँआ		
10.	सर्विस – भोपाल	15.	9826352415, 8839253730

1.	011		
2.	अखिलेश कुमार विजय कुमार जैन		
3.	फगीश / प्रधान		
4.	15.07.1987		
5.	-	11.	4.20 लाख
6.	-	12.	-
7.	एम.बी.ए, बी.सी.ए,	13.	-
8.	5'7''	14.	ग्राम पोस्ट, मढ़िया जिला टीकमगढ़
9.	गेहुँआ		
10.	सर्विस-फरिदाबाद	15.	7470567535, 9977137082

नवदाम्पत्य की हार्दिक शुभकामनाएँ...

सौ.कां. शिखा

सुपौत्री : स्व. श्री रतनलाल-सुशीलाबाई जैन
सुपुत्री : श्री राजेश कुमार-उषा जैन, इन्दौर

संग

चि. गौरव

सुपौत्र : स्व. श्री श्यामलालजी-भगवती जैन
सुपुत्र : शाह श्री सुरेशचन्द्र-स्व. शशि जैन, इन्दौर

का

शुभ विवाह

दिनांक 12 दिसम्बर 2017 को
वरिया प्रजापति वाड़ी, राजेन्द्र पार्क ओढ़व, अहमदाबाद में साआनंद संपन्न हुआ।

सौरभ संग प्राची

स्व. श्री सुरेशचन्द्र जैन
(पड़रा वाले) के पुत्र एवं
श्री महेन्द्र जैन (कर्रा वाले)
की पुत्री का विवाह सकुशल
सम्पन्न (21-11-17) होने पर

हार्दिक बधाई!

OUR VENTURES

Mantra to get the best outcome.....

Best solution
IIT-JEE • NEET • KVPY • OLYMPIAD • NTSE

BeSTTutor
Connecting You to the Best Mentor in the Town

11/26, Opp. Malaw Manglik Bhawan, Vijay Nagar | 0731-4080896, 94259-59956

परिणय बंधन की हार्दिक शुभकामनाएँ

आयुष्मान दिव्यांक

सुपौत्र : स्व. श्रीमति बेनीबाई–स्व. श्री प्रेमचन्द जी जैन
सुपुत्र : श्रीमति मीना–राजेश जैन, इन्दौर

संग

आयुष्मति आरोही

सुपौत्री : श्रीमति विमला–स्व. श्री चंपालाल जी जैन
सुपुत्री : श्रीमति प्रमिला–स्व. श्री संतोष जी जैन, छिंदवाड़ा

का

मंगल परिणय

दिनांक 9 दिसम्बर 2017 को रानी की कोठी, छिंदवाड़ा में साआनंद संपन्न हुआ।

परिणयोत्सव की शुभकामनाएँ...

चि. अंकित

सुपौत्र : श्रीमति राजमती देवी–कीर्तिशेष पं. बाबूलालजी फणीश शास्त्री
सुपुत्र : श्रीमति ऊषा–दिनेश कुमार जैन, खरगोन

का

शुभ विवाह

सौ.कां. श्वेता

सुपौत्री : कीर्तिशेष श्रीमति कपूरीदेवी–श्री भुजबलप्रसादजी जैन
सुपुत्री : श्रीमति राजकुमारी–श्री सुदर्शन कुमार जैन, बांसी(ललितपुर)

दिनांक 12 दिसम्बर 2017 को पावागिरिजी, ऊन जिला खरगोन में हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुआ।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने है, सम्पादक मण्डल का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है । किसी भी प्रकार का विवाद होने पर न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा ।

स्वामी श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास के लिए प्रकाशक, मुद्रक बाबूलाल जैन द्वारा प्रकाशित प्रतीक्षा ग्राफिक्स127, देवी अहिल्या मार्ग इन्दौर से मुद्रित एवं ग्राफिक्स जोन कम्प्यूटर एंड ग्राफिक्स 356, तिलक नगर श्री गोलालारीय दि. जैन समाज न्यास, 64, न्यू देवास रोड, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित